॥ श्रीः ॥

फागचरित्र ।

मोहनसराय ज़िला बनारसनिवासी लाला
मुकुन्दीलाल रचित ।

जिस्में

श्री राधिकाश्याम की अत्यन्त सरस फाग-
लीला अनेक छन्दों में वर्णित है ।

इस ग्रन्थ को भारतजीवनसम्पादक बाबू
रामकृष्णवर्म्मा ने निज व्यय से छापकर
प्रकाश किया है अतएव उन्हीं को
इसका पूर्णाधिकार है ।

काशी ।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९७ ई० ।

प्रथम वार ५००] [मूल्य ।=)

भूमिका।

धन्य आज का दिन है कि मुझे सहृदय पाठकों की सेवा में उपस्थित होने का समय मिला तिसमें भी खाली हाथ नहीं। मुझे विशेष प्रसन्नता इस बात से है कि जो भेंट लेकर मैं उपस्थित हुआ हूं वह इन्द्रसभा या लैलेमजनू का किस्सा नहीं किन्तु प्रेमाधार रसैकसागर श्रीराधाश्याम के गुणानुवाद का परम पवित्र फागचरित्र है। प्रिय पाठकगण मैं कोई कवि नहीं, मैं सामर्थी नहीं, मैं विद्वान नहीं किन्तु भगवत्प्रेमानुरक्त सज्जनों का दासानुदास हूं। यदि मेरा यह लेख आप लोगों के रुचिकर होगा तो मैं समझूंगा कि मेरा परिश्रम सुफल हुआ, नहीं तो मैंने राधिकाश्याम का गुणानुवादही गाया सही; यह क्या कम है! फिर कभी दूसरे अवसर पर आपको प्रसन्न कर लूंगा। परन्तु आपकी गुणज्ञता से आशा तो ऐसी है कि आप इस लेख से अवश्य प्रसन्न होंगे फिर मुझे व्यर्थ क्यों शंका है?

निवेदक

मुकुन्दीलाल सरायमोहन

बनारस।

शुद्धाशुद्धि पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
१०	१५	गजगाभिनो	गजगामिनो
२६	६	खोरि च खोरिन	खोरिन खोरी
२६	७	मृदग	मृदंग
२८	७	बजाबत	बजावत
२९	१४	संसित	संमिध
३०	३	बक्कन	बुक्कन
३१	१८	अम्बर	अम्बक
३५	३	गढ़ि	चढ़ि
५५	१३	उननी	जननी
५५	१३	दुलराबत	दुलरावत
६३	१	हँमि	हँसि
६८	१७	सँगहि लगाय	संगहिलगा
८५	३	मागहूं	मागंहू
९७	१४	कुसुमी सो	कुसुमी सी
९८	८	करि	कति
९९	५	मन्द	नन्द
११३	६	नैननि सों	अखियन सों
१२६	९	रब	रव
१२७	१५	चितबनि	चितवनि
१३३	१४	तियनोक	तियन को
१५१	६	बरसत	परसत

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ फागचरित्र ।

दोहा ।

जय गनपति गौरीस गुरु, गौरि गिरा गोविन्द ।
जय सविता जय जगपिता जय हनुमन्त कपिन्द॥

सोरठा ।

प्रनवौं सन्त सुजान, परहित चित जिनके सदा ।
परमगुननकीखान, जग जलनिधि जलयान सम॥

चौपाई ।

बहुरि कविन बिनवौं कर जोरी । सिसु की छमब ढिठाई खोरी ॥ पुनि बन्दौं देवकि बसुदेवा । पूरन भई पुरातन सेवा ॥ जहँ जनमे त्रिभुवनपति आई । सब में सब से पृथक सदाई ॥ प्रनवौं रोहिनि-पद सु सुभाऊ । जहाँ सेष उपजे बलदाऊ ॥ संकरषन अग्रज हरिभ्राता । जन कहँ सकल मनोरथ दाता ॥ नन्दजसोदा-पद धरि

सीसा। कियो बिलास जहाँ जगदीसा ॥ सुख अनेक लूटति लरिकैया। धनि धनि महरि जसोमति मैया ॥ कीन्हे बालोत्सव विधि नाना। करौं काह मुख एक बखाना ॥ अंक लेति पलना पौढ़ावति। विविध भाँति के लाड़ लड़ावति ॥ घर घर तें आवहिँ ब्रजनारी। हलरावहिँ लइ गोद बिहारी ॥

दोहा।

कंस पठाई पूतना, गरल उरोज लगाय।
नन्दभवन बनि मोहनी, आई प्रीति जनाय ॥

सोरठा।

देखत रूप जसोद, मोहित ह्वै सुत को दियो।
बिहँसि राखि निज गोद, लगी पिआवन स्याम को ॥

चौपाई।

पय सँग प्रान कीन्ह हरि पाना। जननी ब्रजबासिन भय माना ॥ नन्द सहित सब लोग लुगाई। फूंकि दियो बहु काठ जुटाई ॥ कागासुर आवा छलकारी। कंठ दाबि हरि दीन्हो मारी ॥

एक लात सकटा संघार्यो । तृनावर्त खल छिप्र पछार्यो ॥ दुष्टन कालरूप दरसावत । माता बालचरित करि गावत ॥ मित्रभाव ग्वालन सुत जानै । ग्वालिन प्रानहुँ तें प्रिय मानै ॥ करत बाललीला बहु भाँती । सुख लूटति जसुमति दिन राती ॥ अखिल लोकपालक सुख सारा । ब्रज के धन जीवन आधारा ॥

दोहा ।

एक बयस के गोपसुत, हरि सों कछुक सयान ।
नितप्रति खेलत संग मिलि विविध खेल सुखमान॥

सोरठा ।

रहत निरन्तर पास, मनसा वाचा कर्मना ।
धन्य धन्य वे दास, प्रभु-रँगराते जे सदा ॥

चौपाई ।

हरि छबि पर सब तन मन वारे । नहिँ बिसरत छिन साँझ सकारे ॥ मोरपच्छ सिर मुकुट सुहाये । बिच बिच सुभग प्रसून लगाये ॥ केसर खौरि भाल बर सोहै । श्रवन रुचिर कुण्डल मन

मोहै ॥ भौंह बंक सुन्दर चितवनियां । मन्द हँसनि मृदु सरस बचनियां ॥ ग्रान अधर दसननि छवि चारू । कल कपोल भल चिबुक सुढारू ॥ भुज विसाल उर आयत राजै । कंबुकण्ठ बनमाल विराजै ॥ गजमुक्ता-माला गर हलकै । बिच बिच बरन बरन मनि झलकै ॥ रतनजड़ित भुज भूषन भाऊ । करज मूँदरी सोह जड़ाऊ ॥

दोहा ।

भृगुमुनिपद उर देत छवि, नाभी त्रिबलिसुहाति ।
क्षुद्रघण्टिका रटति कटि, सोभा नहिं कहिजाति॥

सोरठा ।

नटवर बेष गुपाल, कसे काछनी पीतपट ।
चलत सुहावनि चाल, अधिक देत छवि पैजनी॥

चौपाई ।

नख सिख सुन्दर स्याम सरीरा । नहिँ पटतर नभ जलद गँभीरा ॥ इन्दीबर तमाल सकुचाहीं। कोटि मदन छवि पावत नाहीं ॥ संकर सारद गनप अहीसा । कहि न सकत सोभा जगदीसा॥

कोटि जतन मुनि ध्यान न आवैं। ताहिँ ग्वाल-सुत खेल खेलावैं॥ मनमोहन मन सब कर मोहैं। ब्रजबीथिन बिहरत छबि सोहैं॥ जो जो रचत चरित सुखदाई। सो सो करत सखा सचु पाई॥ घर घर करत फिरत दधि चोरी। ग्वालिन खिझवत मारि टकोरी॥ लै उरहन अहिरिन सब आवैं। गुन दिखराइ महरि झहरावैं॥

दोहा।

कबहूं सुत समुझावती, धिरवति भय दरसाइ।
नहिँ मानत रिस करि गह्यो, बाँध्यौ ऊखल जाइ॥

सोरठा।

नल कूबर रिषि साप, कीन्हि अनुग्रह ताहि छिन।
परसि हरे सब पाप, करि अस्तुति निजपुर गये॥

चौपाई।

गिरे ब्रच्छ दोउ अति अरराई। सुनत चकित ब्रज लोग लुगाई॥ आजु बच्यौ बालक बड़भागी। लै लै गोद दुलारन लागी॥ नित नव चरित करत ब्रज-खोरी। खेलत हाथ लिये चक डोरी॥

धेनु चरावन प्रतिदिन जावैं। बन लीला करि सुख उपजावैं ॥ धौरी धूमरि लोहो हटकैं। कंस नृपति कहँ नित हिय खटकैं ॥ असुरन मारन हेतु पठावै । लीलहि जसुमति-लाल नसावै ॥ वत्सा बका अघासुर मारे। तनु तजि तजि सुर-धाम सिधारे ॥ जो उतपात होत ब्रज माहीं । प्रभु-प्रताप सो तुरित बिलाहीं ॥

दोहा ।

नाथ्यौ कालीनाग कहँ, रमनकदीप पठाय ।
दावानल करि पान पुनि, हति प्रलम्ब जदुराय॥

सोरठा ।

सुरपति जज्ञ मिटाय, परिपाटी ब्रज गोप की ।
गोबरधन पुजवाय, पाक पात्र गिरि-व्याज सौं ॥

चौपाई ।

कोपि पुरन्दर जलद पठाये । घड़घड़ात ब्रज ऊपर आये ॥ मूसरधार सलिल चहुँओरा। गिरत दमकि दामिनि अति मोरा ॥ भयो को-लाहल सब अकुलाने । लखि ब्रजदसा स्याम

मुसुकाने॥ जाइ निकट गिरिवर उचकाई। कन-गुरिआ धरि सबहिं बचाई॥ मघवा हारि मानि मन भयऊ। प्रभु पहिचान बिनय करि गयऊ॥ अगिनित चरित करत ब्रजचन्दा। महरि महर लखि होत अनन्दा॥ कबहुँ जमुन तट पनिघट रोकैं। कतहुँ बचन-रस ग्वालिन टोकैं॥ कबहूं जुवतिन चीर चोरावैं। कबहुं हरखि दधि-दान लगावैं॥

दोहा।

कबहूं छाँक कदम्ब-तर, ग्वालन के सँग खात।
कबहूं मनिहारिनि बनै, ग्वालिन छलिबे जात॥

सोरठा।

मुरली मधुर बजाय, मन हरहीं ब्रजनारि के।
कबहूं मन सुख पाय, लीला रास बिलासही॥

चौपाई।

कबहुँ बदत संकेत बिहारी। बसुरिन टेरत राधा प्यारी॥ कबहुँ सदन प्यारी के आवैं। क-

बहूं कुञ्ज विहरि सुख पावैं ॥ कँभु लघुमान देत उपजाई । अपर नारि कर नाम सुनाई ॥ कभुं ललिता की छबि अनुरागे। करत सराहन प्यारी आगे ॥ सहि न सकत राधे अकुलाई । विनय सपथ करि लेत मनाई ॥ कबों आइ गुरु मान करावैं । पायन परि परि छोभ मिटावैं ॥ पावस झूलत हरखि हिँडोरा। मेघ राग उमगत चहुं- ओरा ॥ समय समय की ठानत लीला। बिहरत सखा सखी सुखसीला ॥ लागे फागुन मास सु- हावन । मच्यो धूम ब्रज गावम गावन॥ सुख सों भरैं फागु बर खेली । घर घर गावहिं गीत स- हेली ॥ बाजहिं ढोल डंफ़ करतारी। खेलत हँ- सत सजत नर नारी ॥ वन कुञ्जन सर नदी सु- हाई । प्रफुलित सुमन अधिक छबि छाई ॥

दोहा।

पारब्रह्म जहँ अवतरे, अनुपम नटवर बेस ।
को अस कवि जो कहि सकै, छबिसमूह ब्रज देस।

सोरठा ।

प्रभु के चरित अपार, पार न पावहिं सेष श्रुति।
कथा स्वमति अनुसार, फागचरित को कछु करौं॥

इति श्रीमकुन्दोलालकृते फागचरित्रकथाप्रबन्धे प्रथम-स्तरङ्गः ॥ १ ॥

दोहा ।

बासुदेव चरनाम्बुरुह, बिनवत बारहिँ बार ।
फागचरित्र हुलास उर, सब बिधि देहु सुधार ॥

चौपाई ।

पाइ कृपा मन हरख बढ़ाई । करत बिसद गुन कथा सुहाई ॥ कृष्णचन्दपद पंकज बन्दी । फागचरित कबि लालमकुन्दी ॥ फागुन समय सुहावन जानी । खेलन फाग स्याम उर आनी ॥ कौतुकनिधि कौतुक निब करहीं । ब्रजवासिन प्रमोद उर भरहीं ॥ मनानन्द प्रभु रसिक बि-हारी । ग्वालबाल कहँ लीन्ह हँकारी ॥ हँसि हँसि सिखवत लाल कन्हैया । लै लै रंग चलहु सब

भैया ॥ जहँा जहँा ब्रजबनितन पावो । छेंकि छेंकि कै फाग खिलावो ॥ अस कहि भरि भरि रंग कमोरी । फेंट बाँधि धरि केसर झोरी ॥ सोहत पानि कनक पिचुकारी । होली खेलन चले खिलारी ॥ अति उत्साह सबन मन बाढ़े । गलिन गलिन छिन छिन ह्वै ठाढ़े ॥ अभरख अबिर गुलाल उड़ावैं । जुवतिन कोउ निबहन नहिँ पावैं ॥ धूम मचावत गावत होरी । नाचत पिचुकारिन रँग छोरी ॥

दोहा ।

हाट बाट चौहट गली, जहँा मिलति ब्रजबाल ।
नखसिख बोरत रंग सों, गरिआवत सब ग्वाल ॥

सोरठा ।

चली सुवर बर नारि, जमुनातट जल लेन कों ।
तनु सोभा सुकुमारि, मंजु मत्तगजगामिनी ॥

चौपाई ।

नील चूनरी अरुन घाँघरी । सोहति सिर लघु उभै गागरी ॥ देखि स्याम सब ग्वालन फेरे ।

बढ़ि आगे मारग महँ घेरे । नैनकोर हरिओर निहारी । सील सकोच रूप छवि भारी ॥ घूंघट पट कर धरि मुख खोलो । सूध सुभाव मधुर सुर बोली ॥ खेलन आये खेलहु होरी । जामे बची रहै पति मोरी ॥ खेलत तुमहिँ ग्वाल को रोको । पै घर को रिसाहिँगे मोको ॥ कहि कु-लटा सब नाम धरैंगे । घर घर में चवाव बग-रैंगे ॥ करि विचार बूझहु जिय माहीं । मानहु अरज लाल बलि जाहीं ॥

दोहा ।

कह प्रभु होरी खेलुरी, गोरी हिये हुलास ।
स्वकिया धरम विचार तजु, बौरी फागुन मास ॥

सोरठा ।

सखा स्याम रुख पाय, चहुंकित रँग बरखन लगे ।
ग्वालिन गई लजाय, छोड़ि हरष आगे बढ़े ॥

दोहा ।

उत आवति नवनागरी, कोमल उरज सरीर ।
निभरखलखिऔचटपरी, ललचि ग्वालगन भीर ॥

चौपाई।

बैस सन्धि नखसिख छबि उलही। खेलन लगे पाय नइ दुलही॥ मारत भरि भरि मूठ अबीरा। झोरत धरि भरि अंक सरीरा॥ चूनरि फारि बिभूषन तोरी। मसकि बाँह चूरी धरि फोरी॥ हहा करति मुख ग्वालिन गोरी। बिनवति बार बार कर जोरी॥ काहे को चोली बन खोलो। बारी उमर लाल जनि बोलो॥ नन्द बबा की सौंह धरावति। हाथ गुलालन चोट बचावति॥ सैनहिँ वरज्यौ स्याम सखन सों। छूटि गई ग्वालन के फन सों॥ जाति अड़ार एक ब्रज बामा। धाइ धस्यो सुन्दर घनस्यामा॥

दोहा।

बरषन लागे गोप रँग, पिचुकारिन चहुँ ओर।
मारि अबीरन की परी, तिय उर प्रविस्यो छोर॥

सोरठा।

तकितकि मूठि गुलाल, छाड़त कुचन कपोल पै।
परम रसिक नँदलाल, बाँह झोरि हँसि बोलेऊ॥

चौपाई ।

सुरतविचित्रा नारि नवेली । खेलु फाग कहँ जाति अकेली ॥ काहें बदन दुरावत गोरी । नैननि नेकु चितै मो ओरी ॥ हरख मनावहु सब छर छोरी । पतिव्रत धरम त्यागु भर होरी ॥ बोलति नाहिँ लाज की मारी । नई बधू नहिँ घूंघट टारी ॥ सुनि सुनि प्रभु बचनानि सकाती । कर इङ्गित करि बरजति जाती ॥ दै गारी हँसि चले कन्हाई । अपर नारि पहँ पहुंचे धाई ॥ कहै बिहँसि यह फाग-बहारू । बौरी अँचरा उड़त सम्हारू ॥ छाडु उरोज-गरब री ग्वारी । यह गिरि ते सुन्दर नहिँ भारी ॥

दोहा ।

जाबिधिपतिरतिबसकरति कोककलाकरिनारि ।
खेलु फाग सोइ चाव सों यह बहार दिन चारि॥

सोरठा ।

पिचुकारी की धार, कुच नीबी लौं लगि रही ।
टुटति न फूही तार, मनहु रंग सोती खुली ॥

दोहा ।

बुड़ी गुलाल घलाघली, दली मली भरकाय ।
भली भाँति खेली गई, चली छूटि सतराय ॥

चौपाई ।

यह सोहरा ब्रज घर घर लागा । गैल रोकि खेलत हरि फागा ॥ प्रबिस्यौ डर जुवतिन उर माहीं । चिहुँकति मारग आवहिं जाहीं ॥ डगर बगर जमुना तट खरिका । खेलत फिरत लिये ब्रज लरिका ॥ देख्यौ जात एक ब्रजनारी । अक-सर धाइ गये बनवारी ॥ लोचन सैन अल्प मुमुकाई । मधुर बचन बोले सुखदाई ॥ फागुन समय सुहावन गोरी । मनहरखाय खेलुरी होरी॥ मुख सों कहत भरत पिचुकारी । रीझि रही वा भाव निहारी ॥ ठाढ़ रहे प्रभु रंगन मेली । पहिलेही रँगि गई नवेली ॥ सबिनय कह मृदु सुनहु कन्हाई । खेलहु होरी नैन बचाई ॥ देखन देहु मोहनी मूरति । नखसिख निरुपम सोभा पूरति॥

दोहा।

मुख सोंहीं बिधु कछु नहीं, नैन तुल्य नहिँ कंज।
अंग अंग प्रगटति प्रभा, मुदित मदन-मदगंज॥

सोरठा।

स्यामगात छबि जाल, इन्दीवर सम को कहै।
नीलम जलद तमाल, तनु से उपमा पावहीं॥

तोटक छन्द।

कर जोरि रही हरि ओर खड़ी। तब ते सब गोप कि भीर पड़ी॥ चहुँ ओर धमार बहार किये। गरिआवतहीं घिर ठाढ़ भये॥ हँसि रंग चलावत गावत हैं। भरि मूठ अबीर उड़ावत हैं॥ नहिँ लाज सकोच न त्रास मने। हरि संग सु पाइ सुखी सबने॥ झपटैं लटकैं चमकैं मटकैं। धरि झोरत गात तनी चटकैं॥ इक बोलत री सखि फागुन है। सरमात कहा न भला गुन है॥ इक ताल बजावत नाचत हैं। अति द्वन्द चहूँ दिस माचत हैं॥ अकुलाइ कही अबला सरनं। हरि देहु हमैं बिनवौं चरनं॥

दोहा ।

सुनत बचन बरज्यो सखा, बढ़े अगारी स्याम ।
भरे कलस सिर पर धरे, उत आवति इक बाम॥

सोरठा ।

लीन्हे ग्वाल कन्हाइ, अति आतुर पहुँचे तहाँ ।
देखि बाम अकुलाइ, बोली मदनगोपाल सों ॥

दोहा ।

जमुनाजल भरने गईं, बहुत सखी मो साथ ।
भरि घट मैं बेगहिँ फिरी, सासु डरन ब्रजनाथ ॥

छन्द चौपैया ।

हे हरि चितचोरा नन्दकिसोरा खेलहु फाग बिचारी । ननदी मों झलही निसि दिन सलही कलही सासु हमारी ॥ भेंवो जनि सारी लाल· बिहारी जनि देवहु मोहि गारी । धरिहैं सब नाऊँ होइ चवाऊँ जाउँ चरन बलिहारी ॥

दोहा ।

सभे सप्रेम सबिनय सों, हाथ जोरि मुख बैन ।
रोम उठे हिय धकधकी, काँपत अधर जल नैन॥

सोरठा ।

फागुन बिना गुलाल, नारि न सोह सोहागिनी ।
अस कहि मोहनलाल, नैन सैन ग्वालन दियो ॥

चौपाई ।

करि रव गोप बाल रँग भरि भरि । छाड़न लगे तासु तन धरि धरि ॥ लै रोरी निधड़क मुख मीड़ैं । सकृत पाय मन भायो क्रीड़ैं ॥ कसनि तोरि नखसिख अन्हवाई । गावत गरिआवत सचु पाई ॥ कर धरि हरि ता घूँघट ठयऊ । बहुअरि जाहु समय सुभ भयऊ ॥ इतनहिँ हेतु संत कै अरजी । भला कोऊ छेमहु के बरजी ॥ अस कहि आगे चले कन्हाई । उत आवति इक और लुगाई ॥ भूषन बसन सजे बर नारी । सोहति मोतिन माँग-सँवारी ॥ चंचल चख जोबन-मदमाती। ऐंठति चलति लचति बल खाती ॥

दोहा ।

दृष्टि परी नँदलाल के, तुरत धस्यो तेहि जाय ।
भरि भरि झारी ग्वाल लै, रंग दियो ढरकाय ॥

सोरठा ।

औचक परी धमार, चकित भई चित उड़ गयो ।
तनिक न देहँ सम्हार, को हमको घेरे कहाँ ॥

चौपाई ।

मन ठहराय हृदय धरि धीरा । चहूँ ओर ग्वालन की भीरा ॥ देख्यो आगे ठढ़ो बिहारी । उड़त अबीर चलति पिचुकारी ॥ छोरि छोरि पुनि भरत अकोरी । तोरत तनी मलत मुख रोरी ॥ टूटे हार सिँगार मिटाने । अबिर गुलालन महँ तनु साने ॥ देखि दसा निज अति अकुलानी । रिसि उर भरि हरि सन झहरानी ॥ अजब ढीठ तुम गजब हठीले । कपटी निठुर कठोर गठीले ॥ अति दुलारि जननी किये सोखे । नन्द महर के बड़ो अनोखे ॥ लागत सब सों करत ठिठोली । गाँस लिये बिंगारथ बोली ॥ चार जने मानत धौं ताते । मन बढ़ि गयो फिरहु अठिलाते ॥ ऐसहिँ रगरा करत रहोगे । पै हमार कछु करि न लहोगे ॥

दोहा ।

थोरे धन इतरात हौ, करत फिरत उतपात ।
घाट बाट रोकत फिरौ, कौन भली यह बात ॥

सोरठा ।

राखत अपनी टेक, बहुत लगावत चातुरी ।
हमसों लगी न एक, अस कहि सो निजघरचली॥

चौपाई ।

सुनि सुनि हँसत सखा खिलवारी । चमकत देत हजारन गारी ॥ बोले नन्दलाल रसवादी । सब सिंगार किये सखि बादी ॥ मज्जन करि पवित्र तनु कीन्हा। अमल बसन कज्जल दृग दीन्हा॥ केस सँवारि माँग सेंदुर भरि। सुरस मंजरी गुच्छा श्रुति धरि ॥ भाल खौरि तिल चिबुक बनाई । कर मेहँदी पद जावक लाई ॥ अंगराग तनु भूषन साजे । दसननि बिमल बतीसी राजे॥ नागबेलि मुख अधर रँगी हो । नखसिख सोभा सों उमगी हो ॥ फागुन रितु बिचार निज जीको। बिनु गुलाल लागत सब फीको ॥

दोहा ।

निज मन ते गुननागरी, सत्य झूठ मों बैन ।
होय प्रमानिक चाल जौ, तौ खेलहु कछु भै न ॥

सोरठा ।

आछे दिन पिकबैनि, बड़े भाग ते पाइये ।
अस विचारि मृगनैनि, ठाढ़ होय फगुआ करो ॥

चौपाई ।

ग्वालहु ऐंठि कहत री भोरी । चली जात किन खेलति होरी ॥ नहिँ चितवति मन मन गरिआवत । गई जहाँ बहु ग्वालिन भावत ॥ सबसों कहति भरे रिसि बाला । डगर न चलन देत नँदलाला ॥ औरै रीति नीति सब खोई । यहि ब्रज में राजा नहिँ कोई ॥ कैसे कोउ निबही यहि चाली । अब ना रही सखी मुखलाली ॥ बरबस पकरि खिलावत होरी । फारत बसन बि-भूषन तोरी ॥ इतनो कहति हुती सो आली । तब ते उत आई इक ग्वाली ॥ भरत उसास रंग सों भींजी । अंग अंग ग्वालन-कर गींजी ॥

दोहा ।

तरतर चूअत रंग पट, थरथर काँपत गात ।
धरधर छतिया धरकहीं, भर भर दृगजल जात ॥

सोरठा ।

टूटे स्वर मुख बैन, कैसे पति बचिहै सखी ।
लै ग्वालन की सैन, जुलुम करत सुत महरि को ॥

चौपाई ।

होरी बरजोरी करि खेलै । दलि उरोज भुज गर बिच मेलै ॥ रंगन बोरत मानत नाहीं । कौन भाँति बसिये ब्रजमाहीं ॥ झलन्ह परे रगरा नित ठानत । झगरत नेकु संक नहिँ मानत ॥ निज वृत्तान्त कहन नहिँ पाई । दूजी तिय गरिआवति आई ॥ ढरत रंग चपनी तनु सारी । निपट निडर री कुंजविहारी ॥ कहर करत लै फाग समाजू । जहर घोंटि आई हम आजू ॥ दिखरावति उर अंचल खोली । कुच-नख टूक टूक भइ चोली ॥ करि दुलार जननी सिहजाई । ऊधम उठ्यो कछु कह्यो न जाई ॥

दोहा ।

बैर परे नहिँ लाज डर, चलन देत ना गैल ।
जो चाहत सो करि रहत, तजत नाहिँ मनमैल ॥

सोरठा ।

पानी लेत उतार, भरे लोग के बीच में ।
भूषन बसन खुआर, करत न तनिक सकोच डर॥

चौपाई ।

निज रिसि भरि सो कहन न पाई । छन छनाति पुनि तीसरि आई ॥ मोहनवां नहिँ मानत है री । झपटि लपटि तनु आइ गहै री ॥ गाल गुलाल मलत गरिआई । मुदरी गड़ी अधर बिच आई ॥ कोऊ कला न लागति यासों । चलि कर अब कहिये जसुदा सों ॥ उत इक छोभ भरी भभरानी । आवति चली कहति कटु बानी ॥ गारति पट तनु के सरसाने । अरी ग्वाल अब बहुत ढिठाने ॥ लंक भरत अंकम जसुधा को । निपट निसंक बंक वसुधा को ॥ कैसे लाज रही यहि लेखै । घूंघट खोलि खोलि सब देखै ॥

दोहा ।

जात रही मैं जमुनतट, बीचहिँ घेर्‍यो आय ।
गावत गरिआवत हँसत, सोर करत समुदाय ॥

सोरठा ।

रँग की रेला रेल, अन्धाधुन्ध अबीर की ।
खिल्यौ पाइ अकेल, प्रान बच्यो री भाग तें ॥

चौपाई ।

नित की राड़ सही नहिँ जाई । वहुत उपद्रव कान्ह उठाई ॥ ऐसे निन्दति कोटि कुचाली । हिय में सुरत मोहनी साली ॥ लाज न ऊपर सब अनसाती । अन्तर भरी प्रेम मदमाती ॥ ता अँवसर इक जमुना जाती । एक देखि कै ताहि रिसाती ॥ भरन नीर जनि जा अनुठी री । अहिर भीर उपचीर उठी री ॥ नय नृप नन्दसुवन बनमाली । यहि ब्रज में कोउ न्याव न आली ॥ कहत एक आई ब्रज गोपी । काह कहों सोभा सखि लोपी ॥ गावत तान बजत बहु बाजन । बानि कसे सजि निज निज साजन ॥ वसीकरन

सम बँसुरी बाजै । क्रीड़त जमुनातट छवि छाजै॥ कैधौं काम कटक सजि आवत । कै मनमोहन फाग मचावत ॥ मोहि सन्देह भयो री आली । चली भाजि लै गागरि खाली ॥ हँसत आइ इक कहति बहोरी । एरी चलि देखहु नइ होरी ॥

दोहा ।

नाचत गावत गोपगन, कौतुक करत विचित्र ।
कहत नाहिँ बनि आवही अद्भुत फागचरित्र ॥

सोरठा ।

नन्दसुअन दिलदार, अलबेलो छैला अली ।
जनु तनु धारि सिंगार, हास्यसहितक्रीड़तगलिन॥

चौपाई ।

सुनत हर्खि उर सब अभिलाखी । विह्वल जनु मादक फल चाखी ॥ इक तो तरुन वयस ब्रजनारी । दधि माखन की चाखनहारी ॥ दूजे फ़ागुन मस्त महीना । तीजे अंग मदनमदभीना ॥ चौथे यह तिउहार रसीला । भाँति गई पचयें हरि-लीला ॥ स्वेत निचोल खोल दृग आँजे । अंग

अंग रचि अभरन साजे ॥ षोड़स करि सिँगार पुलकाई । जहँा तहँा उठि चलीं लुगाई ॥ कोउ अड़ार कोइ जमुना जाती । कोऊ गलिन ठाढ़ि मुसुकाती ॥ कोऊ अबिर लिये भरि थारी । कोऊ लिये रंग पिचुकारी ॥

दोहा ।

कोउ काहू के घर चली, चढ़ी अटारी धाइ ।
कोउ काँवरी निज द्वार के, कोइ झरोख मुखलाइ॥

सोरठा ।

लै लै अबिर गुलाल, बहुत चलीं हरि-सामुहे ।
झनकत नूपुरजाल, चाल मराल-लजावनी ॥

चौपाई ।

जाहि जाहि हरि फाग खिलाई । बदलि बसन सो सो अतुराई ॥ लै अबीर खोंछा भरि भरि सों । चलीं दावँ लेने गिरधर सों ॥ कहुँ दस पाँच जुरीं हमजोली । चितवहिँ ठाढ़ि साँकरी कोली ॥ एक खेल हरि जानत नाहीं । लै घट चली जमुनतट काहीं ॥ सुनि चाँचरि ग्वालन

मुख गोरी । धड़कि उठो हिय मदन जगो री ॥ ताहि समय इक गोपबधूटी । आई ग्वालन के कर छूटी ॥ बासों कहति जाहु जनि दैया । फाग खेलि मग रोकि कन्हैया ॥ इत बीथिन बिच अ-रर मची है । मनहु गुलालन गैल रची है ॥ हल्ला करत ग्वाल कहि होरी । सोर होत ब्रज खोरिच खोरी ॥ बाजत डफ मृदंग करतारी । झाँझ म-जीरन की झनकारी ॥

दोहा ।

मुरली कर लै स्यामरो, पिहकावत रसबोल ।
छिद्रन फेरत आँगुरिन, काढ़त स्वर अनमोल ॥

सोरठा ।

झूमि झूमि करि गान, चूमि चूमि अधरन धरैं ।
घूमि घूमि के तान, तोरत लटकि मृदंग पर ॥

चौपाई ।

देखति छवि ब्रजजुबती ठाढ़ी । झाँकति कोउ खिरकिन मुख काढ़ी ॥ भरि भरि धरे अ-मित रँग घोरी । अटन दीन्ह ढरकाय कमोरी ॥

कोउ गुलाल झोपति भरि थारी। कोउ सरसर छाड़ति पिचुकारी॥ झोरिन दीन्ह अबीर उड़ाई। अवनि अकास लालरी छाई। अभरख झरझराय सब नायो। चमचमात ग्वालन-तनु छायो॥ कोइ उलचति हारन तें कढ़ि कै। कोइ बरषति रँग आगे बढ़ि कै॥ आकुल ग्वाल सिथिल भो गाता। नहिँ आवति मुख एकहु बाता॥ धुन्धा-धुन्ध न परति दिखाई। जनु अबीर आँधी ब्रज आई॥

दोहा।

श्रवन नासिका मुख दृगन, छायो ओप गुलाल।
भईकीच मगबीचअति, बिछिलपरत महिग्वाल॥

सोरठा।

अरुझिपर्यो महि स्याम, धाइ धर्यो कोउ नागरी।
गहि ल्याई निज धाम, खुटुका दै मुरली लई॥

चौपाई।

कहति कान्ह तुम बड़े रगरिया। कैसन छकयो छेंकि डगरिया॥ चढ़े दुलार न मानत काहू।

थोरे धन मग चलत धधाइ ॥ खेलत फाग दीन्ह बहु गारी । फारी नई आजु की सारी ॥ अस कहि गाल गुलाल लगाई । झटकि बाँसुरी भजे कन्हाई ॥ हाँक देत ग्वालन की ओरी । चकित ठाढ़ि रही ब्रज गोरी ॥ होय सजग सब सखा प्रवीना । फगुआ खेलत लाजविहीना ॥ ऊँचे शब्द हांक दै भारी । गावत हँसत बजावत तारी ॥ कर उठाय अँगिराय कन्हैया । फुहरावत लै नाम लुगैया ॥

दोहा ।

परमखिलारी गोपसुत, उठे तरंग प्रमोद ।
पगे फाग अनुराग-रस, करत अनेक बिनोद ॥

सोरठा ।

कौतुक परम अनूप, थिरिक थिरिक नाचत चलैं ।
बिबिध बनाइ सरूप, जाइ डहँकि तिय भाजहीं॥

चौपाई ।

किये बेष बहु सोहत ग्वाला । चरित अनेक करत ब्रजबाला ॥ तिलक लगाय बने बहु पंडित ।

बोलत सूत्र करत कोउ खंडित ॥ कोउ बनि बंदी त्रिरद बढ़ावैं । भाँति भाँति के कवित सुनावैं ॥ बने धोब धोबिन बहु ग्वाला । नाचत खेल बिबस मतवाला ॥ बहुत किये नट-कला पसारैं । उछरत कूदि कलैया मारैं ॥ कोउ तन चित्र बिचित्र बनाये । सन के दाढ़ी मूछ बढ़ाये ॥ भारी जटा सीस पर कीन्हे । बिकट दसन बनाइ मुख लीन्हे ॥ मुख कारिख गरदभ असवारा । मनहु भयानक स्वांग सँवारा ॥

दोहा ।

कीच लिये कोउ हाथ में, पंक लगाये गात ।
धाइ लगावहिं तियन के, नाक सिकोरि घिनात॥

सोरठा ।

कोउचितपरमउछाह, तनु फरकत संसित चपल ।
खेलन को मन चाह, अमित अबीर उड़ावहीं ॥

चौपाई ।

भरि भरि केसर रंग उमंगा । सौ सौ पिचुकारी इक संगा ॥ चट चट छोड़ि छोड़ि पट भ-

रहीं । छरछरात जुवतिन तनु परहीं ॥ दमदमात दमकला घुमाई । एक ओर तें भेंवत जाई ॥ बुक्का बक्कन बिहँसि उड़ावैं । उछरि उछरि कुंकुमा चलावैं॥ लागत सखिन भभकि मुख छाती। लाली छटा छटकि छहराती ॥ रंग रजत भारी भरि धावत । बोरत बनितन जो जहँ पावत ॥ फाग राग गावत नँदलाला । जाइ अचानक पकरत वाला ॥ चिहुंकि परति महि भभरी नबेरी। अबिर गुलालन देत लथेरी ॥

दोहा ।

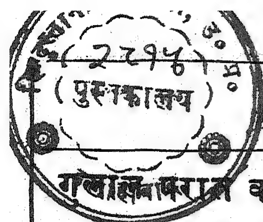
खटखटसीढ़िनजातचढ़ि, अटनभटितमुखकन्द।
जुरि फेंकति जहँ तियन रँग, उरअनुरागानन्द ॥

सोरठा ।

कई ग्वाल लिये संग, पहुँचि रंग भरि लावहीं।
भट भैरिन करि तंग, अंग दबावहिँ ढंग तें ॥

चौपाई ।

चमकि चमकि भौंहन मटकाई । दै दै गारी चलहिँ पराई ॥ काहू के पैठत अँगनैया । मारि



गुलाल [illegible] कन्हैया ॥ ढूका लगत काहु की द्वारी । भाँकत भजहिँ मारि पिचुकारी ॥ कोउ दौरावति लै रँग गोरी । ठाढ़ रहहु खिलेजा होरी॥ लै अबीर कोउ लुकि ठाढ़ी । घात लगाये हिय रति बाढ़ी ॥ देखि लियो तहँ नन्दकिसोरा । आपहुँ चले तुरत वहि ओरा ॥ ओट देत हिय अति अनुरागे । औचट प्रगट भये ता आगे ॥ जब ते फेंकन चहति गुलाला । तब ते चिबुक चूमिगो लाला ॥

दोहा ।

कोउ झरोखे लागि कै, उझकि झाँकि मुसुकाय।
तकि मारी नँदलाड़िले, केसर मूठि घुमाय ॥

सोरठा ।

झझकि हटी मुखमोर, धूँधुर भरि दृग पट परे।
खूँट आँचरा छोरि, पोंछति मन दुचिते किये॥

चौपाई ।

घोरि अबीर हाथ पिचुकारी । दौरि चली हरि पै सुकुमारी ॥ अम्बर तरल ताकि मुसुकाई।

आतुर भरि पिचुकारि चलाई ॥ भरत रंग छा-
ड़ति भरती है। नेकु नाहिँ थिरता धरती है ॥
हटि पुनि केसर लै पुनि झपटै। लवँगलता त-
माल जनु लपटै ॥ हरि सुफेंट ते केसर काढ़ी।
हरि के बदन लगावत ठाढ़ी ॥ अरुन कंज प्रफु-
लित सुनाल जुत। बिधु भूषत उपमा असि अ-
द्भुत ॥ रीझि रही वा भाव ढंग से। भींजि रही
अंगना रंग से ॥ लोल मृगाक्ष कटाक्ष चलाई।
भवन फिरी मन हरष बढ़ाई ॥ देखति और गूं-
जरी कोऊ। ललचि उठी खेलन कहँ सोऊ ॥
ललित सरीर लाल रँग सारी। लाल गुलाल
भरे पिचुकारी ॥ अबिर धूंधिरित पूरि अकासा।
अरुन भिसार चली हरि पासा ॥ दबकत पाँव
दबे वर बाला। लखन वराय धरी नँदलाला ॥

दोहा।

सुधि कराय गारी गयल, बसन देखाई देह।
चेटक सी करि स्याम कौं, लै आई निज गेह ॥

सोरठा ।

जुरीं नारि बर बृन्द, तासु भवन भरि भरि उठीं।
गारी देति गोबिन्द, चमकि चमकि मटकावहीं॥

चौपाई ।

रंग घोरि नहवावति कोऊ । कोउ आँजन आँजति दृग दोऊ ॥ कोउ पट कोइ आभूषन साजै । कोउ केसर मीड़ति मुख राजै ॥ यहि विधि प्रभुहिँ सुनारि बनाई । मन भावत भरि नाच नचाई ॥ छाड़ि दियो अस कहि बृजगोरी । पुनि आयो द्रुत खेलन होरी ॥ भाजि चले मोहन बृजराई । सखा बृन्द महँ पहुँचे जाई ॥ निर्विकार अज बिभु भगवाना । नेति नेति जेहि श्रुति अनुमाना ॥ तासौं दाँव लेति बृजगोरी । ऐसे बँधे प्रीति की डोरी ॥ भावहिँ के बस त्रिभुवन स्वामी । जासु बिरद भक्तन अनुगामी ॥

दोहा ।

सुजन जानि अस भजहिँ प्रभु, वासुदेव करतार।
विनु श्रम छूटहि जगत भय, सुगमसुलभफलचार॥

सोरठा ।

सो कृपाल सुखपाय, बिहरत बिबिध बिलासब्रज।
सखा सखी सुखदाय, क्रीड़त फागुन खेल बिधि॥

चौपाई ।

कोउ हराय कै रिस उपजावैं । कोउ जिताय कै हरष बढ़ावैं ॥ फाग बिलोकि एक नव-बाला। उर उमंगि मन हरष बिसाला ॥ घोरि रंग पिचुकारी भरि कै । चलि दुराय आँचर तर धरि कै ॥ हरुवे नन्दलाल ढिग जाई। फिरी पाछ पिचुकारि चलाई ॥ चहटि चले मोहन दधिदानी। सो अभूत उपमा कबि बानी ॥ मानहु चपला चमकि भजी है । पहटे जलद जाइ गरजी है॥ पैठत गृह तेहि धरे मुरारी। टूक कर चोटी एक किवारी ॥ पकरि पानि बाहर लै आये। ग्वालिन हहा खाति गुन गाये ॥

दोहा ।

बोरि दियो तनु बसन रँग, तोरि कंचुकी बन्द ।
फोरि दई चूरी सुभग, छोरि दयो नँदनन्द ॥

सोरठा।

फिरे बिहँसि ब्रजचन्द, अप डर डरी परोसनिन।
भई किवारी बन्द, धाइ अटन पर गढ़ि गई ॥

चौपाई।

जैसो फागुन फाग बहारा। तैसो रसिया न-
न्दकुमारा ॥ चले जात झूमि खेलत होरी। घूमत
ब्रजवीथिन चहुँ ओरी ॥ सोर करत अति नाचत
गावत। द्वार द्वार पर धूम मचावत ॥ घोरि गु-
लाल बाल इक बारी। खेलन साध ठाढ़ि निज
द्वारी ॥ मन सकात डर लाजावति है। खेलन
जाति बहुरि आवति है ॥ सखा सुखगना पाँव
दबाये। चला तासु की दीठ बचाये ॥ औचक
पहुँचि धरिसि दोउ बाहीं। ग्वालिन चिहुँकि
कही मुख नाहीं ॥ मैं ते आहि कराहि पाहि कहि।
संकित कर जोरे बिनवति रहि ॥

दोहा।

धाय गयो घनश्यामरो, मूठी भरे गुलाल।
मुखलपेटिकुचकुइछके, छटकिनिबुकिगइ बाल॥

सोरठा ।

हँसि बोला सिरिदाम, भैयो भल खेल्यो नहीं ।
लेति फाग को नाम, चेत रहत कछु दिनन के॥

चौपाई ।

अपर एक खेलन अनुमानी । रंग घोरि अनुरागि सयानी ॥ पानि लिये भारी पिचुकारी । झोली भरि अबीर छबिवारी ॥ भरी सोहाग सिंगार किये तन । मन्दमन्द मुसुकाति मनहि मन॥ चली कान्ह पै ताक लगाये । स्यामहु देखि ताहि हरषाये ॥ निकसि चले मोहन तेहि ओरी । आतुर लपकि गह्यो ब्रजगोरी ॥ रंग मारि कर ते दै ठोनी । गिरी गुलालहि संग सलोनी ॥ उठि बहोरि मुख कहत कठोरी । नउज लगो यह खेल बहोरी ॥ नहिँ जानत रस खेल खिलारी । आखिर तो गँवार बनवारी ॥ मन उदास हिय दुखित चली घर । अपर एक बोली बिलोकि कर॥ तासों कहि जीवनफल लीजै । हरि सँग फाग खेलि सुख कीजै ॥

दोहा ।

बहुबिधितेहिसमुझाइकै, मन कर छोभ मिटाय ।
आपु हुलसि खेलन चली, प्रभु पै घात लगाय ॥

सोरठा ।

पहुँची स्याम समीप, रंग लिये हरखित हिये ।
निरखत जदुकुलदीप, तुरतहिँ आये सन्मुखे ॥

दोहा ।

ग्रीव हिलाय रु मधुर भनि, हँसित नाकु भ्रू भंग ।
छोड़ि पिचूका रँग रँगे, तन मन एकहिँ संग ॥
देखि रूप घनस्याम के, भये सिथिल सब गात ।
चहतिचलावनिपिचुकिभरि, करउठि२रुकिजात॥

चौपाई ।

मनभायो खेलत नँदनन्दन । मसकत कुच परिरम्भन चुम्बन ॥ भरि भरि झारी रंग उलीचैं। पकरि पकरि कर इत उत खीचैं ॥ कसनि तोरि कंचुकी मरोरी । कर धरि बेनी छोरि बिथोरी ॥ कसिकै उरुन बीच गहि कीन्हा । दाबि कपोल चूमि मुख लीन्हा ॥ सरकि परी ढुकि चली प-

राई । ललकारत सब सखा इहाई ॥ धरन गई सो आपु धराई । चेत सो गइ अचेत ह्वै आई॥ कहुँ खिलन हित सखिन बुलावै । इत उत डोलति भौन न पावै ॥ इक लखि कहि यहि स्याम सलोना । डारि गयो रँग जनु पढ़ि टोना ॥ उत ते हँसत सुदामा आवा । मनमोहन कहँ टेरि सुनावा ॥ रंग बरषि खिल्यो भल होरी । निकसि चली तटनी तट बोरी ॥

दोहा ।

रंग नदी के भँवर में, बूड़ति ग्वालिन एक ।
स्याम निकासो बेगि नहि, होइहिँ अजस अनेक॥

सोरठा ।

सुनि अतिउक्ति गोपाल, बिहँसि ताकि आगे बढ़े।
जुरी बहुत सी बाल, लिये सखा पहुँचे तहाँ ॥

चौपाई ।

हरषित बरषहिँ रंग समूहा । इतहिँ गोप उत गोपिन जूहा ॥ चहका चहकि कहहिँ सब ग्वाला । झूमक झुकि गावहिँ ब्रजबाला ॥ इक

खेलहिं इक भाव बतावैं । एक खेलि कै ऐंठत आवैं ॥ हँसत स्याम लीला निज देखी । ग्वाल आदरत प्रीत बिसेखी ॥ हार लागि इक घूँघट खोली । चितवति खेल प्रकृति की भोली ॥ तिरछे स्याम गये ता ओरी । कर धरि लगे खिलावन होरी ॥ इक गोहरावत मोहन भैयो । रँग लइ आवत पकरे रैयो ॥ एक भरत इक माँगत ठाढ़े । इक लै चलत प्रेम उर बाढ़े ॥

गीतिका ।

प्रेम बाढ़े चलत इक इक, छपकि रंग चलावहीं । लावहीं इक धाइ के सर, कोउ न निबहन पावहीं ॥ पावहीं जहँ जहँ तियन उतपात अमित उठावहीं । ठावहीं तेहि छाड़ि दूसर, धरन कहँ दउरावहीं ॥ रावहीं नहिँ रंक चीन्हत, करत सब मन भावहीं । भावहीं सो चरित देखत, बरनि कहँ लगि गावहीं ॥ गावहीं बहु तान होरी, गलिन धूम मचावहीं । चावहीं नँद लाल ग्वालन, सखिन फाग खिलावहीं ॥

दोहा ।

लाज लजालू मैं दुरी, सील सिला मै लुप्त ।
न्याव ग्रन्थ भैं भीम मै, छमा छमा मै गुप्त ॥

सोरठा ।

भाँति भाँति के खेल, उपजावैं घनस्यामरे ।
किये रंग अति हेल, जनु अबीर पिरिथी रची ॥

दोहा ।

एक निहारति मग धरे, भरे कमोरे रंग ।
हरे हरे आये निकट, गर भुज मेलि उमंग ॥

सोरठा ।

लियो अंक चपनाय, दै झकोर झुकि चूमि मुख ।
तेहि कर रंग उठाय, नखसिख बोर्यो तासु तन॥

चौपाई ।

डारि हाथ अँगिया नइ फारी । मसकि उरोज ससकि मुख नारी ॥ देखि अनीताचरन लाल कर । गाज परो यह निठुर चाल पर॥ भौंह चढ़ाइ कही इमि बाला । चलो हटो भा बहुत गुपाला ॥ रस में बिरस करत बरजोरी । को खे-

लिहै तुम्हरे सँग होरी॥ कंकन तोरि चुरिल च-
रकाई। झटकि झोरि मुरुकाइ कलाई॥ लज्जा
रहित करहु लँगरैया। कैसे अस सहिये बरि-
ऐया॥ रिसि में भरी जरी ब्रजनारी। चली देत
घर लाखन गारी॥ नान्हहिँ ते यह छली क-
न्हाई। नाहक होरी खेलन आई॥

दोहा।

ग्वाल पहुँचि अररावहीं, झोंकि अवीर गुलाल।
दौरि स्याम अभरक हन्यो, लसफसाइ गइ बाल॥

सोरठा।

होरी के रसरंग, मते सखा सह साँवरे।
किये पान जनु भंग, लरखरात डग घर गये॥

इति श्री मुकुन्दीलालकृते फागचरित्रे द्वितीयस्तरङ्गः॥२॥

सोरठा।

हरि होरी को खेल, जहँ तहँ जुरि ब्रजकामिनिन।
कहत सुनत मिलि मेल, और बात चरचा नहीं॥

चौपाई।

एक कहति हरि हमहिँ छकायो। धरि चोटी रँग सों नहवायो ॥ परीं दृगन केसरकन करकैं। तातें सखी परत नहिँ पलकैं ॥ देहु फूंक यक दूसरि पूछी। आँखि किरिकिटी ते भइ छूछी ॥ ज्यौं त्यौं गड़नि-गुलाल मिटाई। वा नटवर-छबि रही समाई ॥ उर ते टरति न चलनि ललन की। कुण्डल हलनि डुलनि पलकन की ॥ पढ़ो अ-बीर मूठ सों मारत। होरी मिस ठगोरि ब्रज डा-रत ॥ अपर कही री कान्ह खिलारी। पल पल पर पलटत छबि न्यारी ॥ मोरपखा सिर संग स-खागन। गावत तान हरत सब के मन ॥

दोहा।

नट-नागर नागर बड़ो, तन त्रिभंग दृग लोल।
काको मन नहिँ बस करत, वा बँसुरीसुर-बोल॥

सोरठा।

रहत लगाये घात, नई नारि देखै जबै।
इत उत ते मड़रात, गजब गुजारत आनि कै ॥

दोहा ।

जब लौं फागुन मास है, होरिहारन के धन्ध ।
तब लौं खरक न जाइहौं, भैया की सौगन्ध ॥

चौपाई ।

यह सुनि बोली अपर लुगैया । कौन कढ़ै घर सों अब दैया ॥ गारी देत अचूकहि टूटै । मनबांछित रसिया रस लूटै ॥ छलिया लोक-लाज नहिँ जानत । गुरुजन कानि न नेकहु मानत ॥ सुनतहिँ गर्वभरी इक बोली । नहिँ आये मोहन मो टोली ॥ देति मिटाय अहँक्रमन आली। बूझि लेव जौ अइहैं काली ॥ एक कहति यह बात अलेखी । चले गये पर हाँकति सेखी ॥ लागी कहन बहुरि कोउ नारी । रौर परे ब्रज फाग बिहारी ॥ कोउ कह दोष देइ नहिँ काहू। बिनु रँग रँगे कि होइ निबाहू ॥ पुनि बोली इक सुनहु सहेली । हरि सँग फाग आज मैं खेली ॥ कैसहु पकरि भवन लै आई । तबहुँ न साध पुजावन पाई ॥ मन लुटिगो देखत छबि

बाँकी। कर छुटिगो भाजे हरि डाँकी ॥ सुनत तासु मुख बिहबल बानी। और एक बोली फुर जानी ॥

दोहा।

एरी बीर अहीर लै, खेलि गए निज धाम।
मन में हिय में नैन में, अब लौं बिहरत स्याम॥

सोरठा।

छनरुमांचछनस्वेद, हरख होत छन बिकल मन।
जानिपरतनहिंभेद, जातडूबिजिय छिनहिछिन ॥
उठति लहर अनुराग, जिततितखोटतिचेतबिनु।
खेलि गयो कै फाग, कै पसारि ब्रज गर लगो ॥

चौपाई।

या विधि कहत सुनत निसि जागी। भोरहिँ फेरि बजन डफ लागी ॥ घर घर सजग सकल ब्रजगोरी। जहँ तहँ मची खेल पुनि होरी ॥ गली गली छानत नँदलाला। हरष मनावत ग्वालिन ग्वाला ॥ नित प्रति खेलत फागुन खेला। सखी सखा नित करत झमेला ॥ बगरि गई ब्रज चा-

रिहुँ ओरा। फगुआ खेलत नन्दकिसोरा॥ कीरतिकुअँरि राधिका गोरी। चन्द्रावलि ललितादि किसोरी॥ अभिलाषा सवहिन हिय बाढ़ी। दीपति प्रीति रूमावलि ठाढ़ी॥ जुरि इक ठौर परस्पर बोली। मन की एक एक सन खोली॥ सो उपचार करहु सब आली। खेलहु फाग संग बनमाली॥ सुनि बोली इक सखी सुबानी। जो मैं कहौं सो सुनहु सयानी॥

दोहा।

कालिन्दीतट भरन जल, घरन गगरिया लेहु।
फागचरित चलि देखहू, भेद न जानहि केहु॥

सोरठा।

सबहिन के मन मान, क्या बनि आई बात भल।
बारहिँ बार बखान, बड़ी बुद्धि की आगरी॥

चौपाई।

देखन फाग सबहिँ मन आना। करन लगी सिँगार तनु नाना॥ सहज सुहावनि राधाप्यारी। अंग अंग छबि रति बलिहारी॥ तनु सुकुमार

कनक सम गोरी । जगमगात आभा नहिँ थोरी॥ बिनु अंजन सोभित चल नैना ॥ अधर अरुन मृदु कोकिलबैना। भौंह त्रिभंग चपल पल सोहैं। चितवनियां मनमथ मन मोहैं ॥ सुक नासिका दसनि घनि पाँति । हँसनि तनाकु किरिन छह-राती ॥ कल कपोल तिल चिबुक सुहाये । असित अलक छुटि कटि लौं आये ॥ मुख प्रकास निसिकर छबि छीनी । सुन्दर उर त्रिवली कटि खीनी ॥ सुभग डौल भुज बाँह गुलाई । पानि मुलायम करज सुहाई ॥ सुक्ल नखर मोती दुति हारी । अंग संग छाई अरुनारी ॥

दोहा ।

जानु-कदली पद-पदुम, नखसिख रूप ललाम ।
सुन्दरता को कहि सकै, तन मन वारत स्याम ॥

सोरठा ।

लागी करन सिँगारु, मृगमद आँजन आँजि कै ।
दसननि बीरी चारु, अधर रागि तामूल मुख ॥

चौपाई ।

चिकुर ऐंछि चोटी गछि रूरो । दोउ भुज उलटि बाँधि बर जूरो ॥ तापर मनी गूँधि भलि सोभा । उमा रमा सचि रति मन लोभा ॥ रचि रचि मोतिन माँग गुहाई । केसर बिन्दि भाल छवि छाई ॥ श्रवनन तरल तर्यौना छाजै । झुमका झूम कपोलन भ्राजै ॥ नाँक बेध मनि सींक सुहाई । जलज बुलाक सुअधर झुलाई ॥ चम्पा-कली टीक कठवा गर । हार हुमेल माल मोतिन कर ॥ तनु सुगन्ध अरगजा छुहाई । बाजूबन्द भुजन झलकाई ॥ मनिमै कंकन सुन्दर चूरी । मुदरी कनी जड़ी छवि रूरी ॥

दोहा ।

नूपुर पग कटि-किङ्किनी, पहिरे बसन सुरंग ।
जावक नख एड़ी मिलित, दुति अँग अंग उमंग॥

सोरठा ।

छवि बृषभानकुमारि, कहि न सकैं अहिपतिगिरा।
सोभित अनुपम नारि, स्याम मिलन की लालसा॥

चौपाई ।

सजि तरुनिन स्यामा सँग माहीं । सरिता चलीं थोरि रुचि नाहीं ॥ गजगामिनी चलत तनु हलकैं । जगमगात कल भूषन झलकैं ॥ तनु आभा फैलति मग भ्राजै । पद मंजीर झमाझम बाजै ॥ इत लाड़िले नन्दसुत बाँके । खेल बिबस होरी मद छाके ॥ संग सखागन परम सयाने । नयो नयो कौतुक नित ठाने ॥ घाट बाट घर फाग खिलावैं । रमनी कोउ निबहन नहि पावैं॥ रवितनयातट लालबिहारी । खेलत गये जहाँ सब नारी ॥ प्यारी देखि अधिक अनुरागे । लगि लगि कान कहन अस लागे ॥

दोहा ।

वृषभानादिक गोप की, दुहिता छबि अभिराम ।
जूथ जोरि तटनी निकट, आईं जल के काम ॥

सोरठा ।

चलि कर छेंकहु आग, भरि गागरि जब घर चलैं।
तबहिं खिलावहु फाग, कोरी जान न पावहीं ॥

चौपाई।

नीक मन्त्र कहि आपुस माहीं। ताक लाइ बैठे मग माहीं॥ भरि भरि कलस परस्पर बोली। कहु सखि कहाँ होति री होली॥ आहट कितहुँ लगत नहिँ आली। अब तो गयो मनोरथ खाली॥ अस कहि धरि धरि सीस गगरिया। गवनी चिंता सहित डगरिया॥ इत मनमोहन सज्जन प्रचारी। धाये करत सोर अति भारी॥ गरिआवत गावत हँसि होरी। ठट्ट बाँधि घेरे चहुँ ओरी॥ खुली रंग पिचुकारिन सोती। तरतरात सपटी तनु धोती॥ देत छोपि कोउ भरी कमोरी। अबिर उड़ाय देत भरि झोरी॥

दोहा।

छीनि गगरिया सखिन की, हरहर कहि नहवाय।
बिहँसि पटकि महि फोरहीं, इडुरी देहिँ लोकाय।

सोरठा।

बोलत अटपट बैन, धकिआवत गर लावहीं।
दइ नैनन ते सैन, छलक जाहि मटकत सखा॥

चौपाई ।

देखि अनट जुवतिन अकुलानी । सिथिल गात मुख आव न बानी ॥ बिनय करति को कोउ गरिआवैं । कोउ अनसाति कोपि झहरावैं॥ कर जोरैं को कोइ धरि झोकैं । लगत गुलाल काहु कोउ रोकैं ॥ स्याम करत स्यामा ते ख्याला। फेंकत भरि भरि मूठ गुलाला॥ ज्यौं ज्यौं हटति सगीर बचाई । त्यौं त्यौं कान्ह चपेटत जाई ॥ मानहु उमड़ि स्याम घन चढ़ई । पूर मयंक स-संकित टरई ॥ हटो हटकि पट झटकति गोरी। भृकुटी बिकट नयन मुख मोरी ॥ चितै कनेखिन भ्रू मटकाई । बोली हरि पै तरक चलाई ॥ धन्य धन्य तुम धन्य कन्हैया । बार बार मैं जाति ब-लैया ॥ तुमहीं तो यक नये खिलारी । मनभायो करि लेहु बिहारी ॥

दोहा ।

चलता चली तुम्हारि है, जो जो मन रुचि होय।
सो सो करहु निसंक ह्वै, एक न राखहु गोय ॥

सोरठा ।

बड़े महर के लाल, तुम्हरी सरि कोऊ कहाँ ।
साबस साबस चाल, व्याजस्तुती सराहती ॥

चौपाई ।

परम प्रबीन राधिकाप्यारी । बोली बचन नीति अनुसारी ॥ भला सुनो मनमोहन प्यारे । खेलन की यह रीति ललारे ॥ सदयूं परमपरा की चाली । चली सु उचित चाल बनमाली ॥ दोउ दिसि लै गुलाल अनुरागहिँ । इत उत खेलत फाग सभागहिँ ॥ आनै सलिल हमन इत आई । घेरि लिये तुम लै कटकाई । रंगन दीन्ह्यो नख सिख बोरी । जो जो रुचि कीन्ह्यो नहिँ थोरी ॥ तुम सब खेले मन चाहे सों । हमहन अब खेलों काहे सों ॥ हिय में नेकु लाज नहिँ धारत । तिहिँ पर दिखरावत पुरषारत ॥

दोहा ।

नान्हहिँ ते तुम चोर हो, छलत फिरत ब्रजदार ।
निज कुटेव छाड़त नहीं, करत तियन की भार॥

सोरठा ।

ह्वै खिलन की लाग, ग्राम हमारे आवहू ।
जीति जाहु जो फाग, तब तुमको बदिहैं लला॥

चौपाई ।

प्यारी की सुनि गिरा सुहाई । बोली चन्द्रावलि मुसुकाई ॥ कासों कहति बात भलि आली। इनकी है कछु औरै चाली ॥ जैसे कपट रूप ठग धारै । काहू को धन प्रगट न मारै ॥ जब इकान्त घत आपन पावै । औचक उचकि भाजि सो जावै ॥ सोई धरे सवांग कन्हैया । ये सनमुख के नहिँ खिलवैया ॥ सुनत हँसी सब गोपकुमारी। साँचि कहति चन्द्रावलि प्यारी ॥ करति नागरिन गढ़ि गढ़ि बातै । बोले नन्दलाल मुसुकातै ॥ उलटी बात कहति सुकुमारी । कपट रूप औगुन निधि नारी ॥

दोहा ।

तपजपसमदमनेमव्रत, करम धरम मख दान ।
जोग विराग समाधि जम, विवेकादि दृढ़ ध्यान॥

सोरठा।

ज्ञानादिक आचार, ब्रह्मा संभु सुरेश लौं।
कठिन नारि बटपार, लूटिलेति निजसजिकटक॥

चौपाई।

ठमकनि चलनि मुरनि भल सोहैं। हँसि बोलनि चितवनि मन मोहैं॥ मोरनि अंग मुखनि जमुहाई। चित को चेर करति समुहाई॥ कबहूँ भौंह भंग करि दरसैं। कबहुँ लाजजुत ह्वै तनु परसैं॥ क्रोध भरी कबहूं अनसाती। नींद भरी कबहूं अलसाती॥ रोसभरी कबहूं रस देती। मानभरी कबहूं मन लेती॥ कोटिन मकरभरी तन मन सों। धन्य धन्य उबरत जो फन सों॥ नहिँ कछु करि निज जुक्ति बखाना। नरफन्दा तिय कहत पुराना॥ सब के गर की लगनिहार हौ। परमारथ पथ ठगनिहार हौ॥

दोहा।

दोषभरी सुभ गुन छरी, धारी सुन्दर बेस।
ठगत फिरत जग पुरुषबर, सोच सकोच न लेस॥

सोरठा ।

सुनत स्याम के बैन, बिहँसि कही ब्रजनायकनि।
चातुरता के ऐन, बात बनावन में बड़े ॥

दोहा ।

लगे रहत नित घात में, दिवस साँझ निसि भोर।
निजसुभाव समुझहु जगत, चोरन की गति चोर॥

चौपाई ।

ठगिनी करि जानत नँदनन्दा। तौ कत परत हमन के फन्दा॥ साँचि कहौं सुन्दरि सुनि लेहू। अपने चेत फँसत नहिँ केहू॥ दीपक औ पतंग की नाईं। मोहबिबस बरबस जरि जाईं॥ अंग अंग कोटिन ठग तूले। जौबनरूप देखि सब भूले॥ दै करताल हँसे सब ग्वाला। कहत फुरावर मोहनलाला॥ तन पुलकित मन सखिन लजानी। रंचहुँ कान्ह न मानत कानी॥ जो जो कहहिँ सबै सहि लेहू। एकहु को उत्तर जनि देहू॥ समुझि परी सो खेलत होरी। तब की चली बात एको री॥

दोहा ।

कही लली व्रषभानु की, हिय उमंग अनुराग ।
जो साँचो जसुदातनय, काल्हि खिलिहो फाग ॥

सोरठा ।

हरि बोले मुसुकाय, सौंह धरावति व्यर्थहीं ।
देखि लेब मनुसाय, आय ग्राम तुम्हरे प्रिया ॥

चौपाई ।

बदि अस औधि गई उत प्यारी । द्रुत हरखाइ चले बनवारी ॥ सखन सहित बिहँसत पुलकाते । कहत सुनत तरुनिन की बाते ॥ रचहु धमारि काल्हि अति भारी । बिदा किये कह्र बार तिखारी ॥ आयो भवन स्याम सुखदाई । देखतहीं जननी उठि धाई ॥ बार बार दुलरावत चूमत । दिन भर रहत खेल में घूमत ॥ रोहिनि कहति खाहु चलु भैया । जो मन रुचि सो लेहु कन्हैया ॥ अम्ब भूख लागी मो मन को । चलि बेगहि परुसहु भोजन को ॥ अस कहि हरबर पाव पखारी । भूखि लागि करन बियारी ॥

दोहा ।

रुचिभरखाइअघाइ कै, उठि अँचयो घनस्याम ।
पान लेइ निज सेज पर, जाइ कीन बिश्राम ॥

सोरठा ।

लीला को उपचार, मनहीं मनै बिचारते ।
भई नींद असवार, तुरितहिँ प्रभु अँखिया लगी॥

चौपाई ।

रजनी बिगत भयो भिनुसारा । जागे जग-पति नन्दकुमारा ॥ करि सब सौच अन्हाय क-न्हैया । आयो जहाँ हुते बल भैया ॥ पुलकावलि तन मन अति चाऊ । भेंच्यो प्रेम मगन कहि दाऊ ॥ उर अनुराग उमगि बलरामा । देखि स्याम पूरन मन कामा ॥ खेलन हरि चाहत ब-रसाने । बल तन चितै मधुर मुसुकाने ॥ चंचल गात बचन मुख माहीं । चाहत कहन सकुचि रहि जाहीं ॥ लखि कछु कहब कान्ह रुख जानी। हलधर हरषि पूछि मृदु-बानी ॥ कहहु तात चित काह विचारी । सुनि बोले हँसि लालबिहारी ॥

दोहा ।

जब ते लाग्यो मास यह, प्रतिदिन खेलत फाग ।
क्योंहू मन घटि होत नहिँ, नित दूनहिँ अनुराग॥

सोरठा ।

यह हुलास अब भ्रात, करहु समाहा फाग की ।
फागुन बीत्यो जात, बरसाने चलि खेलहू ॥

चौपाई ।

सुनि हलधर मन अति अनुकूला । उर सुख रोम रोम तनु फूला ॥ गिरधर महिमा लखि मन माही । ध्यावत सिव बिधि पावत नाहीं ॥ धन्य भाग ब्रज लोग लुगाई । जिन सँग हरि बिहरत सुख पाई ॥ बोले बिहँसि प्रगट बलभैया। अवसि रचहु यह खेल कन्हैया ॥ उत जननी सुत प्रेम पगी है । भोरहिँ ते गृहकाज लगी है ॥ पाक बनाइ बाहरे आई । टेरति कित बलराम कन्हाई॥ आये प्रेमसहित दोउ भैया । देखत भई मुदित मन मैया ॥ मन हरषित दुलारि उर लाई । चलि जेवनार करहु दोउ भाई ॥

दोहा ।

पदपखारि भ्राता दुहुन, संग सुभोजन कीन्ह ।
उठि अँचये जननी हरखि, दोहन बीरा दीन्ह ॥

सोरठा ।

ग्वालबाल की भीर, जुरन लगी हरि-द्वार पर ।
प्रेममगन जदुबीर, एक एक कों आदरें ॥

चौपाई ।

वृन्द वृन्द ग्वालनसुत आई । करत प्रनाम मिलहिँ दोउ भाई ॥ कोइ नाचत कोइ गावत आवैं । कोऊ सुनि पाछे ते धावैं ॥ पहिरे झगा पाग सिर बाँधे । पीत उपरना सोहत काँधे ॥ रचि रचि अंग अंग पहिरावा । अति प्रमोद उर अन्तर छावा ॥ कटि में कसे फेंट चटकीले । भरे अबीर अहीर सजीले ॥ प्रेम पुलकि इक एक हँकारे । सजि सजि आवहिँ महर-दुआरे ॥ करहिँ जुहार हरखि सब काहू । ललकि मिलत प्रभु हृदय उछाहू ॥ बल सों भेंटि सरस सुख पाई । चपल सुभाव हँसत पुलकाई ॥

दोहा ।

मनानन्द सब जानि अस, आजु खेलिहौं फाग ।
सूधे पग नहिँ महि परत, उर उमंग अनुराग ॥

सोरठा ।

सजे राम घनस्याम, सीस सुहाई पागरी ।
बिच बिच कुसुम ललाम, पेंच पेंच मानिक लगी॥

चौपाई ।

कलँगी झूलि रही मुक्तन की । झलकति कनी बनी मनिगन की ॥ खोंसि मोरपच्छ ता ऊपर । मानहु सींव सकल सोभा कर ॥ घूँघर अलक कलक रतिनाथा । रुचिर तिलक कसमीरी माथा ॥ मकराकृत कुण्डल श्रुति सोहै । मोती नाक हिलत मन मोहै ॥ झुके भौंह धनु काम लजावैं । दृग बारिज पटतर नहिँ पावैं ॥ दसनावली हँसत मुख चमकै । बार बार जनु दामिनि दमकै ॥ ललित अधर मृदु कलित कपोला । चिबुक सुढार मधुर बर बोला ॥ गर सुन्दर कठुला बनमाला । जलज चौसरे गुथे प्रवाला ॥

दोहा ।

सुभुजविजायठ मनिजटित, कड़ा कलाई सोह ।
कनकमुद्रिका नग मढ़े, झलकति छबि सन्दोह॥

सोरठा ।

कन्ध कन्हावरि भ्राज, रतननि लागी झालरी ।
झगा जरकसी साज, जगमगाति कटि मेखला ॥

चौपाई ।

नीलाम्बर पीताम्बर धारे । फेंटा कमर कसे दुतिवारे ॥ पानि लिये बाँसुरी रसाला ॥ पग पैजनी मनहु छबि जाला ॥ स्याम गौर तनु परम सुहाये । साहस कहँ त्रिभुअन नहिँ जायँ । हँसि हँसि ग्वालन सों बतरावैं । फाग खेल की रीति बतावैं ॥ होंहि निहाल सखा सुनि बैना । अब बिलम्ब कत राजिव नैना ॥ सुनि सुबचन रुचि भई न थोरी । लागे करन समाहा होरी ॥ कोउ केसर अबीर कोइ ल्यावैं । कोउ सुगन्ध अरगजा मिलावैं ॥ कुसुम कपूर चूर मथि झोरी । भोड़र भरत कुमकुमा रोरी ॥

दोहा ।

कोउ नागर घोरन लगे, मलय गुलाब मिलाय।
कोइ रँग चटक बिलोकहीं, एक एक पर नाय॥

सोरठा ।

कोऊ परम सुजान, अमित कमोरिन रँग भरैं ।
कोइ नाचत सुख मान, काहू ताल बजावहीं ॥

चौपाई ।

लिये अमित कंचन पिचुकारी। भरे अनेक दमकला भारी ॥ भरि भरि फेंट अबीर गुलाला। गावत हँसत हर्ष मन ग्वाला ॥ होरी साज समाज बनाई । अति बिहार सो बरनि न जाई ॥ गावत फाग चले मगमाहीं । एक एक को जोहत जाहीं ॥ बाजन बजत संग समुदाई । संख मृदंग भाँभ सहनाई ॥ ढोल डम्फ खँभरी मुहचंगा । सारंगी करतार उपंगा ॥ बेनु नफिरी सितार मजीरा । नव सहस्र ग्वालन की भीरा॥ उपानन्द बलदाऊ मोहन । हँसत जात ग्वालन के गोहन ॥ समाचार ब्रजजुवतिन जाने । खि-

लन कान्ह जात बरसाने ॥ जहँ तहँ जुरि छवि देखन लागी । कहति परस्पर चित अनुरागी ॥

दोहा ।

हरिमुखछबि देखत भटू, उपमा सबि बिलगात ।
लगत कलंकि मयंकपर, जड़ जाने जलजात ॥

सोरठा ।

अपर एक अनुमान, बोली सुनहु सहेलरी ।
रीझि सकल उपमान, बसीं अंग प्रति स्याम के॥

दोहा ।

नहिँ भृकुटी धनुहीं बिकट, नहिँ चितवनि यह बान।
स्याम अहेरी कामतनु, हरत हठीली मान ॥
पंकज स्यामनयन सरिस, कहन कहत कबि लोग।
पै मन को सुख होत है, नैननही संजोग ॥

चौपाई ।

नेकु दिखाइ सरूप-लुनाई । तन मन सब बस करत कन्हाई ॥ बसत गोपाल बचन सुर-भोगू । भूलि कहत ससि महँ सब लोगू ॥ सरद पुनो बिधु तरुन उजासा। ताहू ते मुख परम प्र-

कासा ॥ अपर एक हँसि कह मृदु बानी । मो मन भ्रम अस होति सयानी ॥ फागु समा यह नाहिँ चली है । जात कटक सजि काम बली है ॥ बोलि उठी कोऊ ब्रजबाला । भलो बनो बानिक नँदलाला ॥ कर पद सारस बदन सुधाकर । अह निसि रहत प्रकास मनोहर ॥ सरद सुभग सर सों उपजै ना । अपर कमल सम सोहत नैना ॥

दोहा ।

कान्हबदन बिधु सो रुचिर, हास अंसु सुखदाय ।
ताप हरत सीतल करत, देखहु दृग टुक लाय ॥

सोरठा ।

हिय हरषित ब्रजबाम, सिथिलगात मन प्रेमबस ।
सुनत जात घनस्याम, मधुर बजावत बाँसुरी ॥

दोहा ।

करत कोलाहल गोपसुत, अमित उड़ावत रंग ।
गैल मिलहिँ ब्रजनागरिन, भेंटत सुघर सुअंग ॥

सोरठा।

नाचत गावत तान, बिबिध बजावत बाजने ।
पहुँचि गये बरसान, कहि होरी बोलत भये ॥

चौपाई।

छलकहिँ इत उत तरकहिँ ग्वाला। कौतुक निरखि हँसत नँदलाला ॥ सुनत सोर ग्वालन कर भारी। जहँ तहँ निकसि चलीं ब्रजनारी ॥ एक एक सन मरम जनाई । सब सप्रेम राधा ढिग आई॥ तन मन मुदित मिलहिँ दिल खोली। बानी मनरंजन हँसि बोली ॥ लिये सखागन साजि धमारा। खेलन आये नन्दकुमारा ॥ सु-नति छबीली छैल-अवाई। गदगद उर पुलका-वलि छाई ॥ मधुर बचन बोली अलबेली। समा खेल की करहु सहेली ॥ सुनतहिँ सखिन प्रेम सुख पागीं। जहँ तहँ साज जुटावन लागीं ॥

दोहा।

मिलिजुलि घोरत रंग सब, बिबिध सुगन्ध बसाय।
कनककलस भरिभरि धरैं, केसरकुसुम मिलाय॥

सोरठा ।

मृगमद भूरि अबीर, मिलइ मिलइ कोपर भरैं ।
बासि गुलाब सुनीर, लै अभरख बहु संचहीं ॥

चौपाई ।

बहुत कुमकुमा साजति थारी । बहुत लिये कंचन पिचुकारी ॥ राधा कृष्ण खेलिहैं होरी । सुनि घर घर ते धावहिँ गोरी ॥ जो जहँ सुनी तहँ ते दौरी । भई भीर राधा की पौरी ॥ इक नाचैं इक होरी गावैं । एक ढोल लै ताल लगावैं । एक ठाढ़ि देखहिँ टक लाई । एक एक गर लपटहिँ धाई ॥ करहिँ कुतूहल गोपकुमारी । हरि सँग खेलब फाग बिचारी । सब हरि प्यारी नवलकिसोरी । रूपरासि लखि सारद भोरी ॥ भूषित भूषन तनु छबि बाढ़ी । मानहु सब साँचे भरि काढ़ी ॥ ५९ ॥

दोहा ।

ललिता अरु चन्द्रावली, ऊखा आदि समाज ।
कही कुअँरि वृषभान की, अब बिलम्बकेहिकाज॥

सोरठा ।

सुनि राधा के बैन, मधुर सुहावन रसभरे ।
भये परम सुख चैन, रहँसि चली ब्रजगोपिका ॥

चौपाई ।

लीन्हे साज फाग के हेला । सोरह सहस संग दृर मेला ॥ गजगामिनि पटु कोकिलबैनी । सुन्दर चन्द्रवदन मृगनैनी ॥ नखसिख सजीं चलीं ब्रजबाला । गावत फागुन गीत रसाला ॥ मन आनँद अति फाग उछाहू । कहि न सकै सो सुख अहिनाहू ॥ जहँ मण्डल महिमण्डित होरी। ठाढ़े सखा मण्डली जोरी ॥ स्यामा साथ सकल ब्रजनारी । आईं तहाँ भीर अति भारी ॥ सखिन जूथ ग्वालन-सुत देखी । धाइ चले करि नाद बिसेखी ॥ इतहीं सखा उतहि ब्रजगोरी । खेलन लगे चोप करि होरी ॥

छन्द हरिगीतिका ।

लागे जु खेलन फाग मन अनुराग रंग उड़ावहीं । गरिआइ गावहिँ तान ग्वालन डम्फ

ढोल बजावहीं ॥ भरि मूठ अबिर गुलाल धावहिँ ग्वालिनिन जहँ पावहीं। तहँ तंग करि मुख रंग दरि निज कटक चमकत आवहीं ॥ ब्रजनागरी गुनआगरी भरि गागरी रंग छोपहीं । हँसि फाग गावहिँ हाँकि धावहिँ पकरि पावहिँ गोपहीं ॥ धरि खींच ल्यावहिँ जुत्थ अपने तनु गुलालन तोपहीं । छटकाइ भाजहिँ गोप-बालक विविध कौतुक रोपहीं ॥

छन्द तोमर ।

मनमोद फाग उमंग । सर जोत दीन्ह सुरंग ।
पिचुकारि ओटि अनेक । उबरैं न ग्वालिन एक ॥
भरि मूठ मारि गुलाल । चमकैं कुढंगन ग्वाल ॥
उत चोपि गोपिन ठाढ़ि। गरिआइ केसर काढ़ि॥
चहटैं सखान चपेटि । निज दाँव लैं सरसेटि॥
बहु ताल बाजन बाज । नचि गान गो गत लाज॥
बच बोलहीं बहु भंग । बलकाहिँ अंग त्रिभंग ॥
बहु ग्वाल ढूकहिँ लागि। रंग छोपि आवहिँ भाग॥

छन्द हरिगीतिका।

रँग छोपि आवहिँ भागि गोपन सखिन उत दउरावहीं। जो जहाँ पावत तहैं घेर लेत आपन दावहीं ॥ निज घात परि उतपात करि धरि ग्वाल धूम मचावहीं। कर भोरि रँग सौं बोरि भूषन तोरि कुच मसकावहीं ॥

दोहा।

निज पराव नहिँ सुनि परै, खेलत प्रेम बढ़ाय।
धूँधुर उठी अबीर की, अरुनाई रहि छाय ॥

सोरठा।

छायो केसर ओप, आनन बसन सरीरमय।
कहाँ सखी कहँ गोप, चीन्ह परत नहिँ बेगि कोउ॥

चौपाई।

पकरि जात जो जाके ओरी। ताकर कुदशा होति न थोरी ॥ कोड़ करत ग्वालन चमकाई। बोलत व्यङ्ग हँसत गरिआई ॥ सखियन देहिँ रसीली गारी। लै लै नाम बाप महतारी ॥ ग्वालन अमित खेल उपजावैं। छलन हेतु बहु बेष

बनावैं ॥ बनि अबला अबलादल जाहीं । मारि गुलाल उताल पराहीं ॥ भाजत ग्वालिन करहिँ पछेड़ा । धरि पावैं ल्यावहिँ निज बेड़ा ॥ नख-सिख देहिँ रंग सों बोरी । गाल लाल करि क-रहिँ ठिठोरी ॥ करत हुतो यह बहुत ढिठैया । नंगा करि नचाउ ताथैया ॥ दृगन आँजि सिर सेंदुर दीन्हा । पट पहिराइ बेष तिय कीन्हा ॥ ठाढ़ि भई घिर देत थपोरी । नाचत सखा नचा-वति गोरी ॥

दोहा ।

यहिविधिनाचनचावहीं, चहुँदिसमुदलफिराय ।
मनभायो करि छाड़हीं, बहुविधि बिनय कराय॥

सोरठा ।

दुहुँदिसि गोपी ग्वाल, हुलसिहुलसिफगुआकरैं।
इतहिँ छयल नँदलाल, उतहिँ बनी श्रीराधिका॥

चौपाई ।

लै गुलाल धायो बलरामा । सँगहि लगाय गयो सिरिदामा ॥ सबल तोष मंसूखा धाये ।

पिचुकारिन लै रँग बरसाये ॥ भूरि अबीर ग्वाल सुत गोहन । हाँक देत पहुँचे मनमोहन ॥ प्रबिसि गये तियव्रन्द मझारी । खेलन लगे फाग ललकारी ॥ उ व्रचि देत रँग झारी भरि कै । मलि अबीर मुख चोटी धरि कै ॥ धरि कंचुकी बन्द तड़कावैं । भरी कमोरिन से नहवावैं ॥ मानत संक सकोच न राई । धरि झकझोरत नरम कलाई ॥ भरि अंजुलि अभरख उधिरावैं । एक छाड़ि दूसरि पर धावैं ॥

दोहा ।

देखि उग्रता सखन कर, बहुत गईं अकुलाय ।
बहुत सभै भाजी फिरैं, खेलति बहु समुदाय ॥

सोरठा ।

सखियन देखि बिहाल, तब ललकारी लाड़िली ।
पकरहु री नँदलाल, भागि जान पावैं नहीं ॥

चौपाई ।

दुइ दुइ जनी गोप धरि लेहू । कैसहु जान देहु जनि केहू ॥ मारि गुलाल करहु पहुनाई ॥

फाग खेल रस देहु चिखाई ॥ आँजन आँजि देहु अँखियन के । का गुन ये जनिहैं सखियन के ॥ सुनि प्रचार प्यारी की बाला । लै अबीर झपटीं ततकाला ॥ एक एक को कैयक गोरी । लगीं खेलावन धरि धरि होरी ॥ मारि गुलाल दीन्ह अन्हुआई । थके सखा कछु कहा न जाई ॥ नन्द लाड़िले चतुर खिलारी । नट इव उछरि गये दै तारी ॥ जात जानि मोहन दोउ भाई । चले सकल ग्वालन सुसकाई ॥

दोहा ।

कहति सबै राधा-डरन, भाज्यो नन्दकिसोर ।
सत्य कहउ उपखान यह, आधी हिम्मत चोर ॥

सोरठा ।

करत कोटि मख जाप, मुनि न ध्यान पावैं कबौं ।
ऐसो प्रेम प्रताप, सो विहरत सँग तियन के ॥

चौपाई ।

सुर बिवान चढ़ि गगन सुहाये । बरषि कुसुम हर्षित गुन गाये ॥ धन्य धन्य त्रिभुअनपति

लीला। देखत फाग बिनोद रसीला ॥ ललिता निकसि बिहँसि गोहराई। हमसे कित बचि जाव कन्हाई ॥ तुम्हैं पकरिहौं करि बरजोरी। जौ न धरौं मोहि आन किसोरी ॥ बनिता रूप बनाइ नचावौं। तब राधा की सखी कहावौं ॥ हँसन लगी चन्द्रावलि ऊखा। सुनतहिँ बोलि उठा मंसूखा ॥ कत बावरी बकति बिनु काजा। कबहुँ न भई हार ब्रजराजा॥ कंसराज बहु असुर पठाये। बिना जतन हरि सबन नसाये ॥

दोहा।

भली भाँति जानति सखी, नन्दलाल प्रभुताइ।
बन में सोरह सहस की, दधि लीन्ही लुटवाइ॥

सोरठा।

कह्यो स्याम गोहराय, जो गृह को नहिँ भाजिहौ।
दैहौं आस पुजाय, अबहिन सखन लगाइ कै ॥

चौपाई।

सुनि हरि सौं बोली हँसि राधा। जौ तुम्हरे खेलन मन साधा॥ तौ मो सनमुख लालबिहारी।

आवहु लै अबीर पिचुकारी ॥ तब वहार होरी की पैहो। जो तुम लला भाजि ना जैहो ॥ सुनत नागरी गिरा गुबिन्दा। तनु रुमांच मन परम अनन्दा ॥ जो अभिलाष रही अति मनहीं। पूजि गयो सो बिना जतनहीं ॥ फेंट अबीर हाथ पिचुकारी। कई सखा सँग लीन्हे भारी ॥ अति आतुर प्यारी के आगे। आये मन सनेह सुख पागे ॥ नैन नचाइ जोहि द्रुत लाला। हेरि बङ्क चितवनि उत बाला ॥ केसर मूठ भरे दोउ ठाढ़े। हाँकत एक एक मन बाढ़े ॥ संगहिं दीन्ह अबीर चलाई। बीचहिँ लगे भभकि उधिराई ॥

दोहा।

दूसरि मूठी चोप सों, स्यामा स्याम चलाय।
प्यारे बचि दहिने भये, प्यारिहुँ गई बराय ॥

सोरठा।

तीसरि वार गुलाल, लाल लली दोऊ हने।
लगे रसिक के भाल, रसवाली के आँचरे ॥

चौपाई ।

पिचुकारी भरि रंग कन्हाई । मारी प्यारी बदन तकाई ॥ भरे रंग अधिकी दृग लोला । लाल भये मुख श्रवन कपोला ॥ बदन पोंछि वृषभानुकुमारी । कर में लीन्हि रंग की झारी॥ कोपि दीन्ह मन अति अनुरागा । भींजि झागा कन्हावरि पागा ॥ झुकि झुकि केसर मूठि च-लाई । अभरख भरि भरि पसर उड़ाई ॥ भिने लाल छबि अति सरसाई । आँखिन में चकचौंधी छाई ॥ धरि दोउ हाथ मली मुख रोरी । करि अस हाल हँसी मन गोरी ॥ खेलति फाग लाग मनमाहीं । धन्य भाग कहि सुरिन सिहाहीं ॥

दोहा ।

पीताम्बर हरिहाथ धरि, पोंछत बदन अबीर ।
तड़ितओट ह्वै जनु कमल, मिलत चन्द्र मनभीर॥

सोरठा ।

प्यारी ढंग विलोकि, मंजुल नखसिख की प्रभा ।
लखत नयन पल रोकि, मोहित ह्वै मन बरनहीं॥

दोहा ।

असि तै पटु सखी कहत, तासों मित सरमैन ।
कामहु के सर से कठिन, तिच्छन प्यारीनैन ॥

चौपाई ।

गुननखानि सी वा सुखमा की । सुचि निधान तिहुपुर उपमा की ॥ कुहु निसि बारिद स्यामलताई । प्यारी अलकन ते कछु पाई ॥ भौंह सहस धनु काम बनावा ॥ लखनि कटाच्छ बिषम सर पावा ॥ हाँस प्रसून सुगन्धित स्वासा । रक्त चंचु तिल किंसुक नासा ॥ दाड़िम कुन्द कली मोती रद । बिद्रुम जपा बिंब अधरन बद॥ अंग अलौकिक छवि दरसाहीं । चामीकर चम्पा चपि जाहीं ॥ हृदय सराहत मुख मुसुकाई । कर में लिये अबीर कन्हाई ॥ दै धोखो बहकाइ पवारे । लगतहिँ छिटिक गये तनु सारे ॥

दोहा ।

कसिकसिमूठिगुलालकी, झटकिदीन्हनँदलाल ।
फारि दियो कल कंचुकी, कर अंचल विच डाल॥

सोरठा ।

नयननि रही समाय, लाली धूर अबीर की ।
दृष्टि गई चन्धुआय, पलक परत गड़ि गड़ि उठै॥

दोहा ।

कर में पिचुकारी लिये, पिचुकारी में रंग ।
रँग में विविध सुगन्ध बसि, बासत प्यारी अंग ॥

चौपाई ।

राधे गई अधिक अकुलाई । छिन इक बिग्रह सुधि बिसराई ॥ बहुरि सरीर सम्हारि किसोरी । धरि धीरज भरि रंग कमोरी ॥ बोरिबोरि भारी अनुरागी । रंगसमूह चलावन लागी ॥ चंचल तनु मन दृग अनियारे । भृकुटी चढ़ी धनुष मद गारे ॥ माथ सिकोरि मोरि मुख गोरी। कर पल्लव से फेंकत रोरी ॥ नखसिख छबि छाये ब्रजबसिया । रतिनागर मनमोहन रसिया ॥ छिरकत रंग नागरी अंगा । मन प्रसन्न उर प्रेम उमंगा ॥ हिल मिल करत परस्पर होरी । नवला नवलकिसोर किसोरी ॥

दोहा ।

दपटि झपटि रँग छाड़हीं, उत स्यामा इत स्याम।
अंग अंग सोभामई, बलिहारी रति काम ॥

सोरठा ।

नैन नैन के सान, भौंहन ते मटकावहीं ।
दम्पति परम सुजान, खेलत निजनिज घात तें॥

दोहा ।

फागभूमि दोउ अड़ि खड़े, चपल चटक दृग अंग।
होड़ा होड़ी ओज करि, इत उत छूटत रंग ॥

चौपाई ।

घोषलली हँसि भरि लीलासी । सहज सु
वानि धारि चपला सी ॥ कब पिचुकारी भरि
कब छोरी । लखि न परत कब भरति बहोरी ॥
लहकि लफत लचि लंक निकाई । घूंघट की
फहरानि सुहाई ॥ भरि झारी कर पल्लव लीन्ही।
हरि नहवाइ रंगमय कीन्ही ॥ अभरन चुरिल
खनक रव कारी। लहरदार फहरति तनु सारी॥
आधे नयन चितै मटकावै । छैल छांह नहि छू

अन पावै ॥ देखि खेल सखियन सुखमानी। धन्य धन्य राधा महरानी ॥ जो तोको जीतन मन चाहै। सो अपने कर बायु गहा है ॥

दोहा।

राधा ब्रजठकुराइनी, ए हो श्याम मुरारि।
जनिजान्योजियजीतिहैं, यह कोउ ग्वालि गवारि।

सोरठा।

प्यारी पच्छ दिढ़ाय, सारद कहति बिचारि कै।
सुनिये प्रभु ब्रजराय, यह रस दुरलभ लीजिये ॥

चौपाई।

मच्छरूप संखासुर मारे। जलनिधि बूड़त बेद निकारे ॥ कुर्म होय मन्दरगिर लीन्हे। देवासुर छीरधि मथि कीन्हे ॥ सूकर धरि हिरन्यच्छग मारा। गई फेरि बसुधा बिस्तारा ॥ नरहरि ह्वै प्रहलाद उबारे। हिरनाकश्यप उदर बिदारे ॥ बावन बपु धरि बलि पै आये। भीख मागि छलि सुतल पठाये ॥ परसराम तप करि तनु गारे। समरभूमि छत्रिन संघारे ॥ दसरथभवन रामतनु

धारी । ह्वै धरमज्ञ नीत अनुसारी ॥ रावनादि निश्चर संघारे । सुरहित करि नृपता बिस्तारे ॥

दोहा ।

ब्रज राधा के प्रगट ते, जो रस बिलसत आय ।
बासुदेव सो कहहु किन, कवन जन्म यह पाय ॥

सोरठा ।

कबहिं चुरायो चीर, गोदोहन कीन्हो कबै ।
वा जमुना के तीर, कब तिय ह्वैके पनिघटो ॥
बिलस्यो रससिंगार, हाव भाव नायिकन जुत ।
कहउ न केहि अवतार, रास रच्यौ राधारमन ॥

चौपाई ।

घोषलली लीला तनु धारी । जो ब्रज प्रगट न होति विहारी ॥ रससिंगार गुप्त ह्वै जातो । बिभावादि नहि नाम सुनातो ॥ केहि बल कबिन काव्यबर करते । केहि कहि सुनि रसिकन रस भरते ॥ कृष्ण प्रभाव समुझि बर बानी । अन्योन्या बिधि जुगल बखानी ॥ हरि समीप राधा छबि पाई । राधे लग दुति वढ़त कन्हाई ॥ या

विधि मन बिचारि अनुरागी। दम्पति खेल निहारन लागी॥ करि अभिलाष लाख दोउ खेलत। तकि तकि एक एक रँग मेलत॥ जुरा जुरी गुथि पुनि बिलगाहीं। उमगि उमगि झुकि झुकि लपटाहीं॥

हरिगीतिका छन्द।

लपटाहिँ झुकि झझकहिँ हटहिँ धावहिँ धरहिँ छुटि भाजहीं। रपटहिँ लुकहिँ हुलसहिँ हँसहिँ झपटहिँ मुरहिँ मन लाजहीं॥ ठिठकहिँ तकहिँ ललकहिँ छकहिँ तनु थरहरहिँ छवि छाजही। जमि जमि थिरहिँ बलकहिँ नचहिँ तरकहिँ लटकि प्रिय राजहीं॥

दोहा।

कभुँ कुण्डल बेसरि बझै, कभुँ हुमेल बनमाल।
कबहुँ पछेलति लाड़ली, कबहुँ हटावत लाल॥

सोरठा।

जब जित देखत स्याम, तब तित ठाढ़ी राधिका।
इत उत दाहिन वाम, राधा हरि अवलोकली॥

चौपाई ।

समुझि परत नहिँ ग्वालिन ग्वाला । कित मोहनि कित मोहनलाला ॥ होत असंभव सब-हिन के मन । घन में दामिन दामिन में घन ॥ रंग परत सो अंग फरकहीं । चफनि बसन तनु सिकुरि ढरकहीं ॥ रीझी हरिछबि ऊपर प्यारी । कुवँरि रूप पर लालबिहारी ॥ जागे मनसिज बिय हिय माहीं । नैन घुमाइ ऐंठि जमुहाहीं ॥ बिरह बिवस अपान सुधि भूली । तनु प्रस्वेद रो-मावलि फूली ॥ लेत अबीर काँपत कर माहीं । बँधत न मूठ गिरत महिमाहीं ॥ कछु आँगुरिन पसिज लपटाने । अद्भुत खेल खिलारिन ठाने ॥ तकि तकि एक एक पर पारा । दुहुँ को खाली जात अवारा ॥ हँसत ग्वाल ग्वालिन दुहुँ ओरी। दम्पति खेल देखि नइ होरी ॥

दोहा ।

तबहिँबिसाखानिकसिकै, गवहिँचली हरिओर ।
पाछे ते अँकवारि भरि, पकरी करि बरजोर ॥

सोरठा ।

चौंकि उठे घनस्याम, छटपटाय भागन चहै ।
धाइ परी बहु बाम, गहि ल्याई दल आपने ॥

चौपाई ।

छल विलोकि ग्वालन रिसियाने । स्याम छुड़ावन की विधि ठाने ॥ भरि भरि रंग अमित पिचुकारी । धाइ चले तियकटक मझारी ॥ उत सौंहाइ सकल ब्रजगोरी । लै गुलाल ठाढ़ी ठट जोरी ॥ मची फाग पुनि खेल सुहावन । दुहुँ दिसि लगे अबीर उड़ावन ॥ ग्वालहु ढंग अनेक लगावैं । स्याम समीप जान नहिँ पावैं ॥ ताछिन भई सखिन की सेरी । मारि गुलाल ग्वाल मुख फेरी ॥ प्रभु कौतुक विलोकि सुर छकहीं । परम रहस्य जान को सकहीं ॥ सखिन प्रेमबस ग्वाल हरायो । करत सुन्दरिन के मनभायो ॥

दोहा ।

धन्यभाग्य ब्रजकामिनिन, विहरति मोहन संग ।
कोइ चमकावैं कोइ हँसैं, कोउ नहवावहि रंग॥

सोरठा ।

दृग करि कछु तिरछैन, अलवेली वृषभान की ।
कोकिल के सम बैन, बोली मदनगोपाल सों ॥

चौपाई ।

करत हुतो मोहन लँगराई । अब कहिये कैसी बनि आई ॥ छल्यो हमन करि कपट समाजू । दाँव निबाहि लेब सब आजू ॥ कलित घाँघरी सुन्दर सारी । पहिरावों अँगिया जरतारी॥ सिर सेंदुर दृग कज्जल लाई । बास राग मुख दाँत रँगाई ॥ अधर रागि तिल चिबुक बनावों। माथे बिन्दी लाल लगावों ॥ करि सिँगार भूषन पहिराई । चुरिहारिन को वेष बनाई ॥ डाली बगल दबावहु रूरी। भाँति भाँति के साजों चूरी॥ दुबिया दाखी लाली काली । लहठी गजदन्ती जंगाली ॥

दोहा ।

जरद जैपुरी जैतुनी, तार बादला बन्द ।
नील लहरिया मनिजटित, ललित मरहठी छन्द॥

सोरठा ।

आजु घुमाओं लाल, चुरिहारिन के रूप से ।
ऊँची टेर रसाल, ब्रज घर घर बिचवाइबै ॥

चौपाई ।

सुनि ललिता हँसि कहति बहोरी । भौंह चढ़ाय नयन मुख मोरी ॥ सुनु प्यारी हमरे मन भाई । करहु बिसातिन बेष कन्हाई ॥ सुरुख चटक चूनर पहिरावौं । पीत चादरी सीस ओढ़ाओं ॥ नीलोपल पन्ना इक मोती । पदुम राग पुखराज सुजोती ॥ लहसुनिया मानिक्य ललामा। सुभग पिरोजा मनिगन ग्रामा ॥ दुलरी तिलरी माल अनूठी । सीसफूल कनफूल अँगूठी ॥ टीका बेसरि जुगनू बाजू । हैकल नूपुर अनवट साजू ॥ हार हुमेल मेखला चारु । पहुँची काँगना झबिया ढारु ॥

दोहा ।

धरहु पिटारी चीज सब, काँखि देहु दबाय ।
बरसाने के गलिन मैं, बेचहिँ सब गोहराय ॥

सोरठा ।

भृकुटी नाक चढ़ाय, हँसि बोली सुखुमा सखी ।
नाइन स्वांग बनाय, तिउहारी हरि मागहूँ ॥

चौपाई ।

कर से चमकि दमकि सखि सीला । करहु दिहातिन बेष सजीला ॥ ककवा डोकी ऐना गोली । कुलही टोपी झूला चोली ॥ सूई सुरमा डबिया प्याली । मिस्सी टिकुली डाँक सुचाली ॥ झाँपी भरि हरि सीस उठाई । बिचवाइब नगरी घुमवाई ॥ अस कहि हँसति सकल ब्रजनारी । ठग्यो हमन बहु बेष बिहारी ॥ सो सब कसरि काढ़ि निबाहों । करहु आजु जो जो मन चाहों॥ गर्वसहित जुवतिन की बानी । सुनि मन बिहँसि उठे दधिदानी ॥ गुप्त भयो हरि हाथ छुटाई । प्रगटे कटक बाहिरे आई ॥

हरिगीतिका छन्द ।

प्रगटे कटक बाहिर बिहारी सुन्दरिन गोहराइ के । करिहो कहा हमरो रि ग्वारी कहत

कार चमकाइ कै ॥ अँगुठा दिखाय विराय हँसि पहुँचे कटक निज धाइ कै । भे ग्वाल परम नि-हाल मिलत गोपाल अति सुख पाइ कै ॥ उत गोपिकनि मन चकित थकित बिलोकि कौतुक स्याम को । पछितातिं नहिं कहि जात कछु पूजी न चित्त मन काम को ॥ तब नन्दनी वृषभानु की हँसि यों कही सब बाम को । धावो झटू हरि बाँधि ल्याओ देहु गति परिनाम को ॥

दोहा ।

सुनत नागरी को वचन, धाइ चलीं बहु बाम ।
गई धरन घनस्याम को, पकरि गये बलराम ॥

सोरठा ।

सखिन भई आनन्द, चकपकाय हलधर रहे ।
लै आईं निज बृन्द, रंग बरषि नहवावहीं ॥

चौपाई ।

गौर गात सब अंग सुहाये । देखत प्रमदन के मनभाये ॥ पटुका पाग कन्धावरि छोरी । प-करि पकरि बहियां झकझोरी ॥ मुख चूमति

कोउ मारति ठोनी । दै गारी अठिलाति सलोनी॥ करहिँ कूटि रोहिनी लगाई । बसुद्यो छोड़ि नन्द गृह आई ॥ गोरस सुख बस अहिर लुभानी । अब मधुपुर की सुरत भुलानी ॥ कुल मरजाद लोक डर खोई । लाज सकोच प्रीति सरि धोई॥ सरल सुसील सरीर कि छोटी । बाहिज भली हृदै की खोटी ॥ हँसि कह दुनहु नन्द के बालक । जननी कृत ब्रति भइ पसुपालक ॥

दोहा ।

जदुबंसी ते ग्वाल भे, ऐसी रोहिनि माय ।
अबहिँ बुलावहु ताहि कों, तुमकहँ लेइ छुड़ाय॥

सोरठा ।

हँसि बोले बलदेव, सुनि बतियाँ सब तियन की।
यामें कछु नहिँ भेव, पिता हमारो नन्द हैं ॥

चौपाई ।

कान्हा महरकुमार कहावैं । नन्दहिँ बाबा कहि गुहरावैं ॥ सो मम अनुज स्याम मनु गोरी। साँचि बात कस करति पटोरी ॥ सुनि हँसि

बोलि उठीं सब नारी । रानी रोहिनि टूड़ भ-
तारी ॥ हँसी हेतु ब्रज में अस रही । अब बल
निज मुख कीन्ही सही ॥ कहत परस्पर बचन
अनूपा । लगी बनावन नारि सरूपा ॥ पहिराई
यक बसन रँगीना । ता ऊपर ओढ़नि झलकीना॥
घूम घाँघरी सुन्दर धोती । कोरन कनक तार
मनि मोती ॥ लै चपकाय मजीरा छतिया ।
कसि चोली कहि हँसि रस बतिया ॥

दोहा ।

चोटी बार सँवारि कै, सेंदुर माथ लगाय ।
अंजन रंजन नयन में, अभरन तनु पहिराय ॥

सोरठा ।

रँगो अधर मुख पान, करपद्जावकचिबुक तिल ।
कहति लागि बल कान, नई बहुरिया गोरटी ॥

चौपाई ।

जोहि मनोहर हलधर रूपा । नारि बेष छबि
परम अनूपा ॥ जागी मीन केतु उर पीरा । थर
थर काँपन लगे सरीरा ॥ निरखहिँ एक एक की

ओरी। मानहु खड़ी चित्र सम भोरी॥ भल औ-
सर संकरषन पाये। पहिरि ओढ़े छिप्र पराये॥
गये सुदल सब सखा खिलारी। बलहिँ निरखि
हँसि करहिँ चिकारी॥ आँखी के काजर भल
भाऊ। कहाँ लगायो हो बलदाऊ॥ एक कह्यो
धनि धनि वह हाथा। जवनि लगायो सेँदुर माथा॥
कोउ बोल्यो देखहु यह सारी। यामें कैसी लगी
किनारी॥

दोहा।

हँसि मुरलीधर बिंगजुत, कहत सखन सों बात।
अतलस लहँगा जरकसी, दाउहिं नीक सुहात॥

सोरठा।

सुनत रोहिनीलाल, सकुचि सिँगार मिटाय सब।
बोले गिरा रसाल, ग्वालन प्रति मुसुकाय कै॥

चौपाई।

अबलन भगा निलाम्बर लीना। पटुका पाग
कन्हावर कीना॥ छोरि लीन्ह आभूषन सारे।
लै आवहु कोउ सखा दुलारे॥ ग्वालिनरूप धरा

सिरिदामा । गयो जहाँ सोचति सब बामा ॥ प-
छतावा सखियन मन कैसे । भाज्यो चोर लिये
धन जैसे ॥ करहिँ परस्पर सब अनुमाना । देख्यों
ठाढ़ जात नहिँ जाना ॥ एक कही जादू पढ़ि
डाली । भज्यो हमन भरमाइक आली ॥ बोली
एक न जादू टोना । मोह्यो रूप दिखाइ सलोना॥
निज अनुमान करहिँ सब बाता । सिरिदामा
बोल्यो मुसुकाता ॥

दोहा ।

रसलम्पट ठग लंगरो, कपटलपेटी बात ।
बड़े मसखरीबाज हैं, नन्द महर के तात ॥

सोरठा ।

करत सदाहीं घात, देत भुलावा तियन कों ।
औगुन कहो न जात, भरो खुटाई दुहुन मन ॥

चौपाई ।

चलत कुडगर न लाज लजाई । नई नई
अनरीति चलाई ॥ करि हरिनिन्दा सखा प्रबीना।
कीन्हेसि सकल नारि स्वाधीना ॥ या विधि बा-

तन तें भरमाई । पुनि बोल्यो सो कपट बनाई ॥ झगा निलाम्बर पाग न देवै । दैहों कब जब फगुआ लेबै ॥ अस कहि लीन्ह हाथ तें छोरी । दै घलिहों को जानै तोरी ॥ काँख दबाय जतन अति कीन्हा । कपट रूप सो परै न चीन्हा ॥ दूत निज घात बचन उत चोखा । गँव गँव देत सखिन कहँ धोखा ॥ पट भूषन लै चला पराई । उलटि पलटि कै चितवत जाई ॥

दोहा ।

जाइपहुँचिगा कंटकनिज, अतिहरषित सो गात ।
कियोकाजमनहरषलखि, भये मगन दोउ भ्रात॥

सोरठा ।

बलदाऊ कहँ दीन्ह, मनप्रसन्न पट आभरन ।
प्रेमसहित सो लीन्ह, अंग सँवारे आपने ॥

चौपाई ।

ग्वालकपट ग्वालिन जब जाने । कर मलि मलि लागी पछिताने ॥ येक येक सन कहि बिलखाई । कीन्ही सखा कठिन धुतताई ॥ बड़ो चतुर ढीठो मन खोटा । बात बनावन में अति

मींटा ॥ डहँक्यो कपट सरूप बनाई। उर बिखाद कछु कहा न जाई ॥ ललिता कहति सुनहु सब आली। छलिअनि हो ये ना बनमाली॥ बनिता-रूप बनाइ नचैहों। कोटि जतन ते जान न दैहों॥ कहि राधे भुज गर बिच मेली । अवसि करहु यह काज सहेली ॥ धरि ल्यावहु जो माखनचोरा। सबहिँ कसक उर मेटहिँ मोरा ॥

दोहा।

इहै ठीक दै हरषि सब, देखी दिनकर ओर।
करतचरितहोइहिँबिलँब, रहा दिवस अतिथोर॥

सोरठा।

काँपि उठी कुम्हिलाय, दीर्घस्वास चिन्तासहित।
बोली सब अकुलाय, खेल कहो कैसे बनै ॥

चौपाई।

बासर बीत्यो खेलहि माहीं । मन लालच अजहूं नहिँ जाहीं ॥ अस कहि सब निसि निन्दन लागी। कित ते आई राति अभागी॥ जिन्ह सुख महँ उपजायो दूखा। हम पर रही ललानी

भूखा॥ आई कृपा अजस को लेने। कोक कोक-
नद जग दुख देने ॥ बहु बिभावरी दोष लगाई।
एक जुगुति पुनि मन ठहराई ॥ साजि समाज
काल्ह पुनि होरी। खेलिहौं नन्दमहर की छोरी॥
यह सम्मत सबहिन मनभावा। वृषभानुजा अ-
धिक सुख पावा ॥ भलो मन्त्र कीन्हो सब आली।
खेलन-साध पूजिहैं काली ॥

दोहा।

तब कृष्णहिँ ललकारि कै, सकल कही ब्रजबाम।
होरी खेलब प्रात अब, आइ तुम्हारे ग्राम ॥

सोरठा।

या बिधि ते गोहराय, सकल योषिता घर चलीं।
सुनि गोपाल सुखपाय, सखन-साथ निजपुरगये॥

इति श्रीमुकुन्दोलालकृते फागचरित्रे तृतीयस्तरङ्गः ॥३॥

चौपाई।

इत सब सखिन फाग की रीती। कहत सु-
नत मोहन पर प्रीती ॥ आजु घात भल मिल्यो

सयानी। भागि बच्यो मोहन दधिदानी ॥ राधे कह्यो धीर धरु आनी। हरि सों दाँव निबाहब काली ॥ यह सुनि सब मन हरष बढ़ाई। बिदा माँगि निज निज गृह आई ॥ घर घर सखिन फाग की लीला। कीन्ह प्रगट अति सुखदर-सीला ॥ जो नहिँ आई खेलन होरी। सुनि बि-ह्वल मन ललचति गोरी ॥ फागचरित्र श्रवन सुखदाई। पुनि पुनि पूछति नेह बढ़ाई ॥ चरित अनेक एक मुख मोही। कवनि भाँति समुझा-वहु तोही ॥ कहँ गँवारि कहनूति हमारी। कहँ वह लीला फाग बिहारी ॥ जो भरि जनम नि-रन्तर गावों। तदपि जथाबिधि पार न पावों ॥

दोहा।

देखतहीं बनि आवहीं, वरनि जहाँ लगि थोरि।
होरी कौतुक कब कहै, रसना होइ करोरि ॥

सोरठा।

उदै पूर्व लों भाग, ब्रज के लोगनि को भयो।
जहाँ रच्यौ अस फाग, मोहनमदनगोपाल जू ॥

चौपाई।

सुनि सुनि गृह की सब अभिलाखैं। धन्य धन्य कहि तिनकों भाखैं॥ निन्दहिँ निज भागहिँ ते गोरी। दीन्ह न देखन जो हरि होरी॥ एक कही जो जीवति रैहौं। निके निके यह राति वितैहौं॥ नन्दग्राम मचिहै जो होरी। देखिहौं सखी भाग्य बरजोरी॥ एक एक ढिग बैठि सयानी। कहत सुनत इमि फाग कहानी॥ कोउ सोचति सगरी निसि जागत। करवट लेति नींद नहि लागत॥ मुख जम्हात आलसजुत कामिन। भई अपार सिराति न जामिन॥ समुझि समुझि होरी चित चटके। तनु प्रजंक मन हरि पै अँटके॥ नैन नींद उचटहिँ जाही को। जुग सम भई निसा ताही को॥ कोउ सपने परि खेलति होरी। पकरि स्याम को भरति अँकोरी॥ जागि उठी ता छिन अकुलाई। जित तित फिरति भवन बिलखाई॥ बौरी सी ढूंढ़ति अन्धियारे। भागि गये कित नन्ददुलारे॥

दोहा ।

कै कौतुक दिन खिलती, कै सपने की बात ।
नैन खोलि देखति चकित, अजहुँ बनी अधरात॥

सोरठा ।

विकल तल्प पै जाय, फागबियोग बिसूरती ।
बिरहव्याधि दुखपाय, नींद आँखि आवति नहीं॥

दोहा ।

समुझति होरी प्रात की, अकुताई उर नारि ।
उठि निरखति प्राचीदिसा, बेगहिँ उगहु तमारि॥

सोरठा ।

बिगत निसा भा भोर, हरखि उठीं सब गोपिका ।
गृह की टहल बटोर, एक एक के घर गईं ॥

चौपाई ।

बूझन लगीं एक ते एका । करहु बनाव सखी चलिबे का ॥ भयो भोर दुखदा गइ रजनी । अब बिलंब केहि कारन सजनी ॥ सो सुनि जहँ तहँ हरखीं नारी । लगीं चलन की करन तयारी ॥ किये सिँगार साज सब साजे । पहुँची राधा के

दरवाजे ॥ सहज रूप मन मुनिन हरति हैं। तनु दुति सुररमनिन निदरति हैं ॥ पीन उरज कटि छीन सुहाई। तरल दृगंचल चखनि बड़ाई ॥ कीरतिलली भली तनु सोभा। जासु रूप मोहन मन लोभा ॥ कनकवरन बर मुग्धा ज्ञाता। सुभग सिँगार किये नवसाता ॥

दोहा।

ससिमुखबिम्बाफलअधर, मृदुबच हँसनितनाक।
कलकपोलदाड़िमदसन, सुसम श्रवन सुक नाक॥

सोरठा।

भृकुटी कामकमान, अनियारे दृग तकनिसर।
ग्रीव कपोत समान, कच कारे कुञ्चित बड़े ॥

चौपाई।

कुसुमी सो मृदु गात सुहायो। कटि अति छीन मृगेस लजायो ॥ गहिर सुनाभी त्रिबलि निकाई। कर पद पदुम सुकोमलताई ॥ करिवर-निन्दक चाल अनूपा। फैलति प्रभा मनोहर रूपा ॥ हिय अनुराग स्याम मिलिबे की। करती

समा फाग खेलिबे की ॥ करहिँ कलोल सुभग सुकुमारी । घोरति रंग अरगजा डारी ॥ बिबिध सुगन्ध गुलाब सुनीरा । केसर कुसुम मिलाइ अबीरा ॥ कति सखि हेर फेर रँग करहीं । कति लै कनक गगरियन भरहीं ॥ कति अभरख साजहिँ भरि थारी । कति बनाइ साधति पिचुकारी ॥

दोहा ।

करि झोरिन भरि संचही, भूरि अबीर गुलाल ।
कति पंचम स्वर गावती, कति सु लगावति ताल॥

सोरठा ।

बोझियन लोग कहार, भरि भरि बोझा काँवरी ।
लीन्हे रंग अपार, चलत भये सो आगहीं ॥

दोहा ।

होरी वासर पाइ कै, खेलन साध उमंग ।
मनप्रमोद वृषभानुजा, लियो सखिन को संग ॥

चौपाई ।

तनु पुलकित निज देखि समाहू । उर आनन्द मगन सब काहू ॥ किये बनाव अकहु ते

आछे। गावत गीत सखिन ता पाछे ॥ बिहँसि चली मन परम हुलासा। बेंत लिये कर करत तमासा ॥ अतिअनुराग परस्पर गोपी। एक बयस सुखमा नहिँ थोपी ॥ कर कंकन पद पायल बाजे। मन्द मन्द गति हरि गज लाजे ॥ हँसत सुमन झरि उड़त सुबासा। तनु आभा छहरति चहुँ पासा ॥ लपटहिँ एक एक बर धाई। रस की बात कहहिँ मुसुकाई ॥ मग महँ विविध विलास रसाला। पहुँची सकल जहाँ सुर बाला ॥

दोहा।

कृत बनवारीलाल प्रभु, नन्दसुवन घनस्याम।
भोरहिं ते होरी सखा, करि राखे अभिराम ॥

सोरठा।

जोहत जुबतिन राह, लगी चटपटी खेल की।
हिय में परम उछाह, आइ सखा कोउ अस कहा॥

चौपाई।

पठये रहे मोहि जो जोहन। प्रगट भई छबि देखिय मोहन ॥ सुनि स्यामा आगमन कन्हाई।

कहा सखन सों अति अतुराई ॥ चलहु सिताब धमार मचाओ। आजु समूह गुलाल उड़ाओ॥ अस कहि गोपन आयसु दीन्हे । चले समाज साज कर लीन्हे ॥ बाजत झाँझ मृदंग उपंगी । ढोल डम्फ मुहचंग सरंगी ॥ बीन मजीरा संख सितारा । डमरू डंड करतार अपारा ॥ बलदाऊ मनमोहन प्यारे । सोहत कोटि काम मद गारे॥ बैजन्ती गुंजन की माला । रोचन तिलक सोह बर भाला ॥

दोहा ।

स्याम गौर तनु चन्द्रमुख, दसन बीज द्रुम सार ।
मधुपराजि पटतर नहीं, कुंचित स्यामल बार ॥

सोरठा ।

अधर ललित मृदुबोल, हाँस इन्दुकर निन्दहीं ।
मृदु सुमनेस कपोल, पंकजदल नैना बड़े ॥

चौपाई ।

चितवनि सरस बिकट बर भौंहैं । चंचल पलक चलत छबि सोहैं ॥ सिखीपच्छ सिर मुकुट

सँवारे। नील पीत अम्बर तनु धारे॥ अंग अंग अगिनित छबि बसई। बरन बरन आभूषन लसई॥ खोंसे बँसुरी लकुट दबाये। पिचुकी हाथ बाँह उमकाये॥ अमित गोप बालक लै संगा। चले उड़ावत अबिर सुरंगा॥ बोलत बिंग हँसत अनुकूले। माते फाग सुरा सुधि भूले॥ करत केलि मनमोद अपारा। हँसत जात सुनि नन्दकुमारा॥ पुर बाहर ललनागन ठाढ़ी। पहुँची ग्वालगोल अति गाढ़ी॥

दोहा।

दल बगमेल भमेलगन, रेलि दिये बहु रंग।
नाद करत बाजन हनत, गावत तान तरंग॥

सोरठा।

दहुँदिस उड़त अबीर, चपरिचलावहिँकुमकुमा।
रंगन भोज्यो चीर, तापर अबरख जगमगै॥

चौपाई।

ग्वालबालकन धूम मचावैं। गावैं गरिआवैं चमकावैं॥ सखिन जुत्थ आतुर चलि जाहीं।

रंग छोरि झकझोरि पराहीं ॥ अभरख लिये धाय के नावैं। धर धर सखिन धरन जो पावैं॥ छीनि बसन हँसि रँग में बोरैं । मीजि कपोल हाथ झकझोरैं ॥ औचक तियन धरैं जाही को। अद्भुत पतन करैं ताही को॥ आँजन आँजति आँखिन माहीं। बिना नचाये छाड़ति नाहीं॥ कौतुक अमित गोप सुत करहीं। विविध वेष धरि तरुनिन छरहीं ॥ मारहिं केसर मूठ घुमाई। नाक नयन मुख श्रवन समाई ॥

दोहा।

अंचल सों मुख पोछहीं, कहति ढीठ बड़ गोप।
अबिर रंग छाड़न लगो, करि करि गुंजरिन चोप॥

सोरठा।

ग्वालनहूं हरषाय, रंग चढ़वाहिँ पेंच पर ।
मनहिँ मने मुसुकाय, भरि दम्कला चलावहीं॥

चौपाई।

बरषहिँ रंग अमित पिचुकारी। नावहिँ कूदि कूदि बहु भारी॥ खेल देखि बलदेव कन्हैया ।

वाह वाह कह वाहरे भैया ॥ एक मतो ह्वै गोप-कुमारी । छाड़ति रंग चोप मन भारी ॥ चन्द्रा-वली विसाखा ललिता । हँसि हँसि कहति धन्य व्रजवनिता ॥ बोलहिँ एक एक ललकारी । दुहु दिसि होति कोलाहल भारी ॥ सुघर जसोदा नन्दन प्यारे । खेलत फाग सखन ललकारे ॥ बढ़ि कछु आगे बेनु बजावैं । सुर में राग मनोहर गावैं ॥ फिरि आवहिँ चमकत जदुनाथा । नाचि जाहिँ धरि ग्वालन हाथा ॥ लिये रंग कर बिहँसत धावैं । जुवतिन के तनु मदन जगावैं ॥ मुरुकहिँ भौंह टेढ़ करि मटकैं । अबिर गुलाल हाथ ते फटकैं ॥

छन्द हरिगीतिका ।

मुरुकाहिँ भौंह मरोरि नाक सिकोरि चमकत धावहीं । भरि अंक गोरी मलत रोरी तान होरी गावहीं ॥ सब लादि मंसूखा सुखगना तोख सिरिदामा बने । डफ ताल ढोल बजाइ नाचहिँ गाइ होरी सुख सने ॥ कर कमर लचकत नैन

मटकत रंग ढरकत अंग पर। प्रभु जात थरकत पाछु सरकत पाँव लरखत ढंग पर॥ तनु तोरि कै मुख मोरि कै रस बोरि गारि सुनावहीं। गहि चूमि मुरली अधर धरि लै नाम तियन बजावहीं॥

दोहा।

मन उछाह हरि हाँक दै, बहुत ग्वाल लै संग।
प्रविसिजाततियझुगडमहँ, धरिधरि भोरत अंग॥

सोरठा।

रंग देहिँ ढरकाय, भरि झारी सिर सखिन के।
मटकतचलहिँपराय, गरिआवत किलकत हँसत॥

चौपाई।

जानत खेलन रीति कन्हाई। रतिनायक रसिया सुखदाई॥ जात अकेल रंग भरि झारी। बरषत बोरि बोरि पिचुकारी॥ जुबतिन करत अनेक उपाई। धरि नहि पावत जात पराई॥ छलकति छबि चित चतुर छबीला। स्याम कलेवर रुचिर रसीला॥ छमकत चलैं पितास्बर फेरैं। सबल तोख मंसूखा टेरैं॥ सहित सनेह

निकट सब आये । श्रवनन लगि लगि यों समु-
झाये ॥ श्री वृषभानकुअँरि गरबीली । चतुर ल-
गावति आपु छबीली ॥ बिलग कटक ठाढ़ी वह
बाला । लै लै रंग जाहु सब ग्वाला ॥ मन ल-
गाइ खेलहु गोरी से साध पुराइ देहु होरी से॥
हँसत गोपसुत दै करतारी । आपहु संग चलहु
बनवारी ॥

दोहा ।

सखावचन सुनि हँसि परे, अतिकौतुकीगोपाल ।
प्यारी दृष्टि बचाइ कै, चले चोर की चाल ॥

सोरठा ।

घेरि लिये चहुँ ओर, मध्य राधिका चकितचित ।
बरषि रंग तनु बोर, भाजि चले ग्वालन सहित॥

दोहा ।

फागथली कीरति लली, नैन बिसील नचाय ।
उमगीली प्रभु पै चली, सरसीली समुहाय ॥
और नारि के भूल में, मति रहियो नँदलाल ।
भली भाँति हौं करहुँगी, फाग खिलाइ निहाल॥

चौपाई ।

समुझि बात मन अनख बढ़ाई । आतुर छीनि लई अगुआई ॥ जोमभरी हरि धरि भरि बाहन । हौस पुराइ हिलाइ उमाहन ॥ करज चिबुक गहि बदन उठाई । मीसि कपोल गुलाल लगाई ॥ जात कहाँ भाजे नँदछोना । बड़े महर के लाल सलोना ॥ अस कहि पिचुकारी कर लैकै । मारति रंग सामुहे कैकै ॥ भौंह सकोरि मोरि मुख बाला । तकि तकि छाड़ति रंग गुलाला ॥ हँसि हँसि कहति ओट कत कीजै । एक लई अब दूसरि लीजै ॥ खेलन में नकबेसरि झूमै । झुलनी हलति अधररस चूमै ॥ [illegible] चुनरि फहराहीं । तनु फरकत भूषन झनकाहीं ॥ देखि रूप मोहन अनुरागे । सनमुख ठाढ़े भीजन लागे ॥ चपल अंग अति ओप भरी है । लजि चपला घन ओट दुरी है ॥ ज्यौं ज्यौं दाँव करति हँसि प्यारी । त्यौंत्यौं बिबस होत बनवारी ॥

दोहा ।

भुज निकसे अंचल उठे, घूंघट उघरे माथ ।
देखि देखि सोभा मगन, कवि बरनै किमि गाथ॥

सोरठा ।

देखत ग्वालिन ग्वाल, दुहूवनकी छवि सोह अस ।
मानहुअचलतमाल, कनकलताअरुझातिछुटति ॥

चौपाई ।

अद्भुत केलि बरनि नहिँ जाई । बारि गई उपमा न लजाई ॥ पंकज गज मराल सुठि सुन्दर । कदलि मृगपति चंप सरोवर ॥ चक्रवाक पारावत सुक पिक । बिम्ब कुन्द दाड़िम पुष्पाधिक ॥ मृगसुत खंजन मीन कमलदल । बिसिखासन मयंक सोभा भल ॥ मनिधर अहि निज तियजुत सोहै । थिर ह्वै तरु तमाल छवि जोहै॥ तब गोहराइ कहा सिरिदामा । चित लगाइ खेलहु घनस्यामा ॥ सुनतहिँ भये सचेत गोपाला । पिचुकारी भरि रंग गुलाला ॥ तकि तकि लगे चलावन भरि भरि । अगहुड़ बढ़ि बढ़ि पीछे टरि

टरि ॥ उत प्यारी इत रसिक मनोहर। खेलत निज निज घात बिबिधि कर ॥ रंगत एकहिँ एक निहारी। तराबोर भये जुगुलबिहारी॥ दोउ मन खेलन की अभिलाखा। निज कृत कोउ लगाइ नहिँ राखा॥ मनहु तड़ित घन करत लड़ाई। कुज समुझावत इत उत जाई ॥

दोहा।

झुकि झुकि रंग पवारहीं, साधि साधि यक एक।
उभै परस्पर बचि रहत, करि करि जतन अनेक॥

सोरठा।

दंपति खेलनिहारि, ललचि चली ललितासखी।
मानस इहै विचारि, गहि ल्यावों गोबिन्द को॥

चौपाई।

देखि सुअङ्गना सनमुख आवा। लिये रंग ललितहिँ गोहरावा ॥ ठमकत कहाँ जात री गोरी। नेकु खेलि ले मो सँग होरी॥ अस कहि कसि केसर रँग मारी। ललिताहू चलाइ पिचुकारी॥ जुगल फाग बिधि चतुर खिलारी। उत

हरि सखा सखी दूत प्यारी ॥ चन्द्रावली कहत अस आई। मन पुजाइ द्यौं सखन खेलाई ॥ सुनत सुदामा सै मुख माना। चन्द्रावलि ढिग आइ तुलाना ॥ फाग लाग करि धाई ऊखा। सपदि चला सोहीं मनसूखा ॥ हँसि हँसि चलीं बिसाखा सुखुमा। मधु मंगल आये तेहिँ रुखमा॥

दोहा।

भये संग सीला सबल, बिरजा औ सिरिदाम।
सकल सखाजुत उर उमगि, चपरि चले बलराम॥

सोरठा।

चोपि चलीं सब बाम, जोंट जोरि खिलन लगी।
एक एक के नाम, लै गरिआवत लाज तजि ॥

चौपाई।

इत उत अभरख अबिर उड़ावैं। भेलख पाइ कपोल लगावैं॥ दुहुदिसि रंग लेत अति दापू। मारत आन बचावत आपू ॥ भरि भरि मूठ गोप मुठ भेरी। मारत लच्छ सखिन तन हेरी ॥ ग्वालिन पसर अबीर उड़ावैं। दमकि दमकि झा-

रिन रँग नावैं ॥ बिछिलि परत महि उठत तुरत हैं । हटि पीछे पुनि जाइ जुरत हैं ॥ एक एक छबि बरनि न जाई । लाख लाख रति काम लजाई ॥ अतिसै रंग भूमि भइ कीचा । लाली चमकि रही दुहुँ बीचा ॥ सब रँगि गये एक नहिँ कोरा । चले अबीर उमगि चहुँ ओरा ॥

हरिगीतिका छन्द ।

चहुँ ओर रंग उमंगि उमड़े पवन भरि नभ छावहीं । जनु जलद लाली घटा घेरि घमगड़ चहुँ दिस धावहीं ॥ घहरात डंफ मृदंग गरजत घोर सोर सुनावहीं । चपलासि पिचुकारी चमाकहिँ बुन्द रँग झरि लावहीं ॥ दादुर पपीहा मोर झिल्ली सम सखा सखियां बनी । झनकहिँ पिहकि नाचत बकत गावत हँसत सोभा घनी ॥ वरषहिं समूह गुलाल रँग उत गोप बालक इत अली । छिति बहत झिर झिर सिमिटि चहुंकित रंग की सरिता चली ॥

दोहा ।

घाट बाट बीथी भवन, बापी कूप तड़ाग ।
सबतर छाई लालरी, लाल भये बन बाग ॥

सोरठा ।

सखी सखा सब लाल, लाल भये लाला लली ।
छित नभ सोहत लाल, जित देखो तित लालरी॥

दोहा ।

उभै ओर रँग गेरहीं, एक न एक सकात ।
झपटि लपटि छुटि भाजहीं, जौवन मद मद्दरात॥

चौपाई ।

अतिसै अरर मचा दिसि दोऊ । निज पराव मुनि परत न कोऊ ॥ इत उत परम कुतूहल होई । खेलन ते घटि होत न कोई ॥ निज निज दाँव लेन के कारन । छल ते करत उपाय हजा-रन ॥ नन्दलाल ब्रषभानुकिसोरी । मन बढ़ाइ खेलत दोउ जोरी ॥ भरे मूठ ठाढ़े छबि बांकी । मारहिं एक एक तन ताकी ॥ कबहूँ फेरि लेत मुख गोरी । कबहूं बचत स्याम अँग मोरी ॥ कबों

कान्ह केसर मुख लावै । प्यारी पिचुकी साधि चलावै ॥ तब हरि पकरि बाँह भकभोरी । अंचल धरि मोती लरि तोरी ॥ लंक पकरि अंकम भरि लाई । छाती छुइ मुख चूमि पराई ॥ हलधर अरुभे प्रमदा पाहीं । बोरि दियो तेहि अति रँग माहीं ॥ चले भाजि मुख देत टकोरी । चक्रित ठाढ़ि रही ब्रजगोरी ॥ जात देखि मोहन बलदाऊ । चले सखा सब करि करि भाऊ ॥

दोहा ।

निजदलजुरि ब्रजनागरिन, आवति एक न बात ।
ग्वालनकृत अनरीत पर, समुझि २ पछितात ॥

सोरठा ।

तब ससोंच कह बैन, राधे सखिन सुनाइ कै ।
परत नेकु नहिं चैन, दाँव लिये बिनु सखन सों॥

चौपाई ।

सुनु री बीर जसोदाढोटा । बड़ो कुचाली कपटी खोटा ॥ चितवत कहर कुरंग कन्हैया । बिबिध भाव करि छरत लुगैया ॥ निरमोही

निरसंक हठीला । गरबीला रसरंग छटीला ॥ कोउ बोली सुनु जौं धरि पावों । सब कुचाल तर कपट छुड़ावों ॥ देउँ सकल रगरा मिटवाई। फिरि न चलहिँ अनरीत कन्हाई ॥ तासु बचन सुनि सब सुख मानी । केहि बिधि गहों हूहै उर आनी ॥ ललिता सुठि उदार बर नागरि । परम रँगीली सब गुन आगरि ॥ कहति सखिन सों हेतु बुझाई । पुरुष रूप बनि धरों कन्हाई ॥

दोहा ।

ग्वाल सरूप बनाइ कै, बाँधी पाग झुकाय ।
कुंडल श्रुति कठुला गरे, अंग अनंग लजाय ॥

सोरठा ।

सखिन देखि मन दंग, द्रुत न बाम बपु लखि परै ।
अपर न कोई संग, चली कवाई देइ कै ॥

चौपाई ।

ग्वालकटक अति आतुर गोरी । पहुँची चकपकाति चहुँ ओरी ॥ जहँ सुखकन्द नन्द के नन्दा । खेलि फाग मन परम अनन्दा ॥ घट घट

व्यापक लीलाधारी। गई तहाँ करि कपट गँवारी॥ करि प्रनाम हँसि ओरहन दीन्हा । काहे न ह-महिँ संग प्रभु लीन्हा॥ जानत कह अजान सम जानो। याको सखा बिलग जनि मानो ॥ फाग साज सजि आतुर भाई । चल्यौं तुम्हारी सुधि नहिँ आई ॥ अस कहि बिहँसि ताहि उर लाये। सोउ मिली सुभाव दुराये॥ कपट सनेह मधुर बर बानी। चीन्हि परति ना परम सयानी ॥

दोहा।

हाथ मिलाई हाथ सों, बचन कपट छल भूर ।
करत चलति घनस्याम सों, कटक छुड़ायसि दूर॥

सोरठा।

ललितापरमप्रबीन, दृढ़ करि धरि कर कृष्ण को।
बड़ो अचगरी कौन, अब कित जाओगे लला ॥

चौपाई।

चौंकि उठे लखि तिय चतुराई। उर धक-धकी बदन मुरझाई ॥ नीचे नयन सकुच उर जागे। पग पछिलाय छुड़ावन लागे ॥ धरिसि

कान्ह अवलोकि लुगाई। झुण्ड झुण्ड आतुर ह्वै धाई॥ लपटी अंग अंग मो गोरी। ग्वालन हँसि बजाइ थपोरी॥ पकरि गये हरि अस कहि धाये। घेरि लिये चहुँ पास सुहाये॥ दौरी सखिन अनेक बरूथा। दिये हटाय सखन के जूथा॥ सब प्रफुलित लखि भा बड़ काजू। लह्यो रंक जनु तिहुँपुर राजू॥ ललितहिं चूमि आदरति राधा। आली बड़ो काज यह साधा॥

दोहा।

रहा असंभो मो मने, गहि न जाहिं नदलाल।
कहाँ सहचरी एक तू, कहाँ समूह गोपाल॥

सोरठा।

बहुरि स्याम-तन हेरि, मुसुकानी दृग सैन दे।
लखि रुख प्यारी केर, खिलन लागी गूजरिन॥

छन्द भुजंगप्रयात।

लिये रंग कोऊ बिहारी नहावैं। धरे हाथ कोऊ अबीरैं लगावैं॥ कपोलैं धरैं चारु ठोढ़ी सुचूमैं। भरे प्रेम कोऊ गहे बाग झूमैं॥ हँसैं एक

ठाढ़ी लिये रंग झारी । न पावैं सुदावैं भई भीर भारी ॥ कहैं नेकु आली हटो फाग खेलैं । भई प्रीति आवेग एकै ढकेलैं ॥ हटैं एक पाछे धसैं एक आगैं । मनो दामिनी मेघ सों लागि भागैं॥ करैं गान कोऊ बजावैं सुतारी । नचैं रीझि कोऊ रचैं को निहारी ॥ लिये हाथ बुक्का उझुक्का उ-ड़ावैं । अचुक्का खुटुक्का गलुक्का लगावैं ॥ ढूकै सान दैकै इकै को बतावैं । बिलोको हितू स्याम के रूप भावैं ॥

दोहा ।

मोरि मोरि मुख मुसुकहीं, स्रवत नयन ते नीर ।
भूलि गई सब खेलरी, भरत उसास अधीर ॥

सोरठा ।

बड़ि बड़ि जुवतिन साथ, फाग खेल में जीतऊ ।
फसे राधिका हाथ, रूप रहचटे प्रेम बस ॥
तब राधा मन पाय, पानि पकरि चन्द्रावली ।
निज दल गई लिवाय, मोहन मदनगोपाल को॥

चौपाई ।

पीत बसन भूषन बनमाला । मोर मुकुट बांसुरी रसाला ॥ छीन लीन्ह मुख चूमति नारी। चूकि गयो क्यों फागखिलारी ॥ तुम तो चतुर खेलबिधि जानो । आज कहाँ गुन सकल हिरानो ॥ बहरावत कत बोलत नाहीं । चितओ सोंह नेकु मो पाहीं ॥ हँसि बोली ब्रषभानुकुमारी । नयो खिलारी कुंजबिहारी ॥ जमुना पुलिन नारि अपबादा । किये आजु सो देखहु बादा ॥ सुनि हँसि परी सकल ब्रज जोखा । महरि जसोमति कुँअर अनोखा ॥ बेगि करहु निज बस्तु हवाले । पस्यो आजु ठगिनिन के पाले ॥ कह ललिता ताकहु द्रुत सोहन । मैंही धरनिहारि हों मोहन । करि परिहास कहति कोउ नारी । लेहु बलाइ कहाँ महतारी ॥

दोहा ।

बत्सा बका अघा नहीं, दावानल नहिँ आज ।
यह ब्रषभानुकुमारिका, कुटब कठिन ब्रजराज ॥

सोरठा ।

इक बोली नँदलाल, चाल गवाँई निज कहाँ ।
काह भयो वह गाल, ठकुराई वह का भई ॥

दोहा ।

देखहु री गति आजु की, तनक न परत लखाव ।
मानहु छल नहिँ छुइ लग्यो, सुन्दर सरल सुभाव॥

चौपाई ।

एहो ब्रजठकुराइनि राधा । छाड़ि देहु हरि बिनु अपराधा ॥ हैं यह अति सूधे ब्रज माहीं । इनकहँ मन्द कहत कोउ नाहीं ॥ बोलि उठी कुमुदा यह सुन के । जानत हरि नीके निज गुन के ॥ चीर हरे दधिदान लगाये । भली भाँति प्रभुता दिखराये ॥ कह राधिका बड़े इन रगरी। कहि न जात जो कीन्ह अचगरी ॥ बड़ो निघर-घट है कुल बोरा । ब्रज में पर्यो नाम दधिचोरा॥ पेट ललात प्रात उठि चोरी । धरि धरि छाड़ि दीन्ह ब्रजगोरी ॥ दया सहित कोउ निकट बु-लावैं । तनिक छाछ पर नाच नचावैं ॥ जैसे यह

तैसी पुनि माता। चोरपुत्र पर बढ़ि बढ़ि बाता॥ ओरहन दीन्हे उलटि रिसाती। सुनि सुत गुन ना नेकु लजाती॥

दोहा।

मालिन बनि गजरा गरे, पहिराई इन आय।
नायनि बनि जावक दिये, आइ हमन के पाय॥
लिलहारी बनि गोदना, गोदी सब के बाँह।
पटहारिन बनि इन गुह्यो, घरघर फिरि व्रजमाँह॥

सोरठा।

रोकन जानत राह, चोरी गुन जानत भले।
गौवन के चरवाह, फाग खेल का जानहीं॥
लाललाजडरआनि, सुनिसुनिबतियां तियन की।
भूल आपनी मानि, नैन नैन जोरैं नहीं॥

चौपाई।

कहति विसाखा हरि तन हेरी। भले दाँव हमहन की फेरी॥ अब सूधे रहिहो के नाहीं। सुनि सुखुमा बोली सब पाहीं॥ काह कुचाल बखानों इनकी। लेहु चुकाय कसर सब दिन

की ॥ अस सुनि सब गोपी अनुरागी । नारि स-रूप बनावन लागी ॥ सुठि नवीन बर चूनरि लाली । बूटेदार चाल चटकाली ॥ दामिनि दुति बहु भाँति बनाई । दै मन सिखन ताहि पहि-राई ॥ कच सँवारि बाँधी कल चोटी । लटक सटक नागिन मन मोटी ॥ मंजुल माँग काढ़ि अति सूधी । भरि सेंदुर मोतिन ते गूंधी ॥ लै अलगेंद उरोज बनाई । कल कंचुकी भीन प-हिराई ॥ घेरदार लहँगा कटि सोहै । छबि मै पोत जोति मनमोहै ॥

दोहा ।

पान लगाइ खिलावती, देति बतीसी दाँत ।
ओठ रँगति दृग आँजती, चन्दन चरचति गात ॥

सोरठा ।

जो मन सखिन सुहात, सोई प्रभु के चित बस्यो।
बनि आई भलि बात, गोड़ भरावत बैठि ढिग॥

चौपाई ।

ढूंगुर आड़ बिंदुली रोचन । चिबुक नील

कन तियमदमोचन ॥ मुखमयंक भूषित करि नारी । अभरन पहिरावति रुचि भारी ॥ सीस फूल टीका वर वन्दी । अति सोभा किमि कहै मकुन्दी ॥ श्रवनजटित ऐनक कनफूला । गोल कपोल झूमका झूला ॥ बेसर नाक झूलनी ट-गना । बाजू बांह कलाई कगना ॥ दुलरी तिलर टीक गर भरियाँ । चन्द्रहार मोतिन की लरियाँ॥ पनवाँजड़ित हुमेल सुहाई । मनानन्द ललिता पहिराई ॥ डारी गर मोतिन की माला। जोसन-कसी बाँह कोउ वाला ॥

दोहा ।

बाँक बरेखी पाहुँची, टाँड़ नगिहिरी बन्द ।
द्वै द्वै चूरी आँतरे, सोहत पट्टा छन्द ॥

सोरठा ।

सहित हथेली छाप, अँगुरी मुनरी नगजड़ी ।
पहिराई कर आप, चतुर सुता वृषभानु की ॥

चौपाई ।

झब्बा गँठि आँचर के कोने । कहि न सकति

छबि बाँधी जोने ॥ रत्रादार घुंघुरू चहुँ ओरी। गुच्छा गुच्छे रेसमी डोरी ॥ कटि करधनी कान्ति सुर छाजै। हालत मन्द मन्द गति बाजै ॥ तुला कोटि पद लसति पलानी। कड़ा छड़ा अनवट छवि खानी ॥ बिछिया सकरीदार पदज में। भूलि गई सब नखसिख सज में ॥ सातो नव सिँगार मनभावन। भूषन बसन मनोज लजा-वन ॥ हरितनु सब सिङ्गार सुहाये। पट भूषन सौगुन अधिकाये ॥ भ्रमित ठाढ़ि अवला चहुँ-घाहीं। नारि कि पुरुष ज्ञान कछु नाहीं ॥ स्याम सरीर छटा छबि छरै। अंग अंग दृग नेकु न ठ-हरै ॥ नेति नेति जेहिँ बेद बतावै। सो किमि लाल मकुन्दी गावै ॥

दोहा।

जोगी जोगवत ध्यान में, प्रगट दरस के काज।
नव जौबन कामिन बने, प्रेम बिबस ब्रजराज ॥

सोरठा।

सारद नारद सेस, सनकादिक बिधि अगमहू।
गनपति संभु सुरेस, भेव न पावत देव कोउ ॥

चौपाई ।

अखिल लोकपति चरित स्वछन्दा । दूर्लभ मुनिन ध्यान नदनन्दा ॥ ऐसे प्रेमाधीन मुरारी । अहिरिन स्वाँग सजे बर नारी ॥ हँसि हँसि कहहिँ कूटि की बोली । नाचहु लाल आजु दिल खोली ॥ कटि सों लटकि मटकि नैननि सों । बोलि उठी ऊखा सखियन सों ॥ कहों फुराखर सबहिँ सुनाये । नहिँ छोड़ों बिनु आज नचाये ॥ चन्द्रावलि बोली करि छोहू । काहे न नाचति नन्दपतोहू ॥ चूमि कपोल हँसी इक गोरी । नाचति किन ठाढ़ी कस भोरी ॥ नैन बक्र गति बचन रसीला । गहि बहियाँ बोली सखि सीला॥

दोहा ।

नन्दसुअन की भारजा, नृत्य करहु करि गान ।
सान बतावहु मटकि दृग, तब पैहो घर जान ॥

सोरठा ।

कहललितामुसुकाय, कत मुकुरतिनइकामिनी ।
करधरि लंक लचाय, नाचहु सोच सकोच तजि ॥

चौपाई।

हँसति बिसाखा अंचल धरि कै। नाक मोरि दृग चंचल करि कै॥ आजु लाज लागति बिनु काजा। भूलि गयो वा दिन ब्रजराजा॥ खेलत गेंद हमारी खोरी। छोरि लीन्ह हौं हाथ भरोरी॥ बिनय कराय नचाय बिहारी। तब दीन्ही अल गेंद तुम्हारी॥ जब राधा मुरलिका चुराई। कै-सन नाच्यौ नाच कन्हाई॥ एक बार ललिता के द्वारे। खेलत आयो लाल सकारे॥ फेंकि दियो चक डोर घुमाई। राधे कंगन ते अरुझाई॥ लीन्ह छुड़ाय रिसाय किसोरी। नाच्यो तब पाया चक डोरी॥

दोहा।

मातु नचाई बालपन, करि मन पूरन प्रीत।
घर घर नाच्यो पेट हित, कारन दधि नवनीत॥

सोरठा।

नाचत हमइन साथ, रास बिलसि बृन्दाविपिन।
कहौं कहाँ लगि गाथ, अब नाचे बनिहै लला॥

चौपाई ।

कहि इतनो हँसि रही चुपाई । इक प्रमदा बोली मुसुकाई ॥ आओ हम तुम संग गोपाला। नाचैं गावैं गीत रसाला ॥ बिरिजा बात हँसत मुख काढ़ी । हृदये प्रीत तरंगिन बाढ़ी ॥ भली बनी नइ नारि अनूपा । लाजति रति लखि स्याम सरूपा ॥ नृत्य करति किन हरखि छबीली। कैसन परी कुटेव लजीली । सुखुमा सखी कहति इत राते । काहे न कढ़त स्याम मुख बाते ॥ जित तित से सब तरक चलावैं । कबों नारि कभु पुरुष बनावैं ॥ राधा कही हुलसि छतियन सों । मोहि लियो मोहन बतियन सों ॥

दोहा ।

मन्द हँसनि दृग तीरछे भृकुटी कछुक सिकोर ।
काहे न नाचत स्यामरो, मो मन माखनचोर ॥

सोरठा ।

सुनि प्यारी के बैन, रौके मन नृत कारन को ।
सकुचि मोरि मुख नैन, पग पैजनियाँ बजि उठी॥

चौपाई ।

लखि रुख सखिन मगनमन फूली । मानहु प्रेमपालने झूली ॥ उर अनुरागानन्द उमंगा । अति उछाह प्रफुलित सब अंगा ॥ लगी मिलावन तार तार सों । सारंगी कर लै सितार सों ॥ लिये उपंग काहु सुप्रबीना । काहू लिये पखाउज बीना ॥ ढीले दाम ढोलकी कसती । तामें कनक कड़ी बर लसती ॥ खींच खींच मुदरी पुनि ठोंकैं । जहँ रब मिलै तहँ तेहि रोकैं ॥ काहू लिये मजीरा भ्राजें । काहू कर करतार बिराजैं ॥ अति हरबर सब साज बनाई । मिले एक स्वर सरस सुहाई ॥

दोहा ।

हरिढिगढ्ढमिसोहतितियन, नृत्यसाजकर माहिँ ।
लगी नचावन भाव भर, दाँव पाय हरखाहिँ ॥

सोरठा ।

जाहि धरत मुनि ध्यान, बेद पुरान बखानहीं ।
समुझ मूढ़ करि ज्ञान, नचन लगे सो प्रीतिबस॥

चौपाई ।

प्रथम नृत्य गति चरन उठाये । गत बिलोकि गन्धर्व लजाये ॥ सखियन हसैं बोलि ताथैया । रुनुक झुनुक पग धरत कन्हैया ॥ तैसो सरस सुताल बजावैं । वाह वाह करि चुहुल मचावैं ॥ ज्यौं ज्यौं जुवतिन करती रिन्दा । त्यौं त्यौं ठुमकत बालगुबिन्दा ॥ चक्र फिरत लहँगा फहराई। जनु नृत मोरपंख छितराई ॥ हौले धरत नृत्य गति पैयाँ । लचक लचक लचकति करिहैयाँ ॥ कर उठाय लचकाइ कलाई । चरननि नाचि जात चटकाई ॥ ग्रीवाँ लटक मटक भ्रू केरी । सीस हलावहिँ पलकन फेरी ॥

दोहा ।

हलितलंकतियमनकलित, सुखमावलित सरीर ।
चलितनयनचितबनिललित, गलितकामकरतीर॥

सोरठा ।

नृतत कला बहु धार, फिरिफिरिथिरकतलेतगत।
घुघुरुन की झनकार, मारमन्त्र जनु पढ़ि रही ॥

दोहा।

कहुँ बैठत करि भावना, उठहिँ नचावत गोड़॥
ठाढ़ होत कहुँ सखिन ढिग, तालतालगतितोड़॥

चौपाई।

इक कर कन्ध एक कटि धरि के। निहुरि निहुरि नाचत कछु टरि के॥ लटकनि कटि मचकनि जंघन की। मोहि लेत मन ब्रजरंभन की॥ नचत परत पद छन छन बाजै। भुलत न ताल नाक नटि लाजै॥ चपल सरीर पलक फरकावैं। नयन सयन करि तियन रिझावैं॥ मृदु हँसि मुख घूँघट पट ढाँकी। नाचत लचकि लेत गति बाँकी॥ झलकि जात मुरुकात बहोरी। ताल बिधान ताल पर तोरी॥ अनुपम नाच चाहि मन भूलै। मैनकादि अप्सरा न तूलै॥ मुरुकि फिरे हँसि ठुमकत मोहन। ठाढ़ तियन पहँ तकि तिरछोहन॥

दोहा।

नयनकोर बेधक बिसिख, कसकत कामिनिकाय।
काँपत देहँ सम्हार नहिँ, बिनु गथ गईं बिकाय॥

सोरठा ।

करति प्रसंसा काम, धन्य धन्य मनसिज हरे ।
बिरद जगत सरनाम, जुवपन हृदयबिदारिका ॥

चौपाई ।

मनमथ पीर कठिन हिय सहतीं । धीरज धरि पुनि हरि सों कहतीं ॥ आनन खोलि गान अब कीजै । मधुर तान श्रवनन सुख दीजै ॥ सुनि रस बचन रसीले रस के । गावन हेतु मगन मन चसके ॥ मंजुल मधुर मनोहर रागी । अधिक सनेह सुरस सुर पागी ॥ मुख दृग मोरि लगे हरि गावन । तरुनिन लगीं सुसाज बजावन ॥ गावत हरि मुखछबि अति बाढ़ी । निरुपम लखति सारदा ठाढ़ी ॥ मारि तान कर भाव बतावैं । मनहुँ बसीकर मन्त्र जगावैं ॥ भरत चारु सुर पंचम बैना । देत सैन तिरछे करि नैना ॥

छन्द हरिगीतिका ।

करि नैन कछु तिछैंन मादक पैन सैन चलावहीं । उर ऐन तियन बिचैन ह्वै मन मैन पीर

सतावहीं ॥ धरि धीर मन करि थीर चीर सम्हारि सब ब्रजनागरी । लागी नूतन हरि साथ हाथ उठाइ गावत फाग री ॥ इक रंग सुघर सुअंग मोहि अनंग नैन कुरंग से । भृकुटी त्रिभंग उमंग उरसिज अलक कुटिल भुअंग से ॥ हँसि मेलि गर भुज केलि हरि सँग नाचहीं सुख पाइ कै । इक सरिस वाजहिँ पैजनी झम झमकि झम झहनाइ कै ॥ सुर ताल गान रसाल सुन्दर चाल नाचहिँ आतुरी । गन्धर्व किन्नर यच्छ चारन की बधू बर पातुरी ॥ तिज नृत्य करि अपमान निज मुखरहित दुख सुख सों भरी । अवलोकि फाग सुराग अति अनुराग करती फुलझरी ॥ लीला रँगीला नवल हरि की कामिनिन मनभावनीं । जैसोइ ताल बजावती तैसोइ करती गावनी ॥ मुख गावना कर भावना समुझावना अति भाव सों । धरि बाँह सुर नरनाह तिय की नाचहीं चित चाव सों ॥

दोहा ।

मधुर मधुर सुन्दर बयन, गावत फागुन तान ।
जात श्रवनमग सखिन उर, करत घाव जनु बान॥

सोरठा ।

कबहुँ चढ़ावत खीच, ऊँचे स्वर सों राग बिधि।
क्रमहिँ उतारत नीच, तोरत ताल सुढंग सों ॥
फागुन मास ललाम, छओ राग सह रागिनी ।
जागत आठों जाम, सब सुर में होरी कहैं ॥

चौपाई ।

ऐसी नाच अनोखी हरि को। तिलत्त मा-नहिँ पहुँचति सरि को ॥ श्रमजलकन बिधु मुख प्रगटाने। छवि जनु सीपी सुत लपटाने ॥ भरत उसास पास स्यामा के । ठाढ़ भये मधि सब बामा के ॥ चलित नयन बाँकी चितवनियाँ । सोहत अधर मधुर मुसुकनियाँ ॥ कछु लजात जनु नई बधूटी। घूंघट ओट सखिन मन लूटी॥ मानस हरषित सब ब्रजगोरी। ललितादिक ब्र-षभानुकिसोरी ॥ चाहत रही दाँव निज पावों ।

पकरि स्याम को फाग खिलावों ॥ सो अबला करि नाच नचाई। ताते सहस भाँति सुख पाई॥ मनमोहन नखसिख छबि देखी । बिरह बिवस सब भई बिसेखी ॥ सचराचर मोहत प्रभु बेखा। कहहु कवन ग्वालिन को लेखा ॥ टिकुली लसत लिलार सुचमकै । बिरहानल जुवतिन उर दमकै ॥ झलनी मन अचेत करि डारै । झब्बा भूल झूल हिय मारै ॥

दोहा ।

मन-लहरत हहरत हियो, थरथर तनु थहरात ।
अँगिया तनी तड़ाकहीं, कुच फरकत सहरात ॥

सोरठा ।

जागी पीर मनोज, बेदन अति व्याकुल भई ।
हिय उमग्यो भरि ओज़, बिहरन लागी स्याम सों॥

चौपाई ।

प्रेमबिबस सगरी ब्रजगोरी । फिरि फिरि प्रभुहीं भरति अँकोरी ॥ कोउ तिय अरसि परसि हरि के तन । काम जरावति है मनहीं मन ॥

काहुहिँ लपटि जात हरि आपै । देत मिटाइ बिरह की तापै ॥ पानि पकरि कोउ लावति छाती। मिलन सरिस सुख पाइ जुड़ाती ॥ पान खवावति कोउ सुकुमारी । मृदु कपोल छुइ होति सुखारी ॥ चूमि लेति मुख कोउ निज पानी । धधकी बिरहौ लवरि बुझानी ॥ राधा अधिक लालरँग-भीनी । अति अनुराग बाँह गहि लीनी ॥ अंकम भरि हरि कों चपकाई । बोध भयो हिय तपनि बुझाई ॥

दोहा ।

काहु गोपि मन चोप करि, मसकति बने उरोज ।
तैसो सिसकत स्यामरो, मोरत नैन-सरोज ॥

सोरठा ।

सुरनग व्योम सिहात, धन्य भाग कहि तियनोक।
फूलन के बरसात, करि क्रीड़ा विधि देखहीं ॥

चौपाई ।

सुरतिय प्रभु के चरित निहारी । उतकंठा चित चिन्ता भारी ॥ हमहूं सब होइत ब्रजनारी।

फगुआ बिहरित संग बिहारी ॥ सुर प्रसन्न मन करहिँ प्रसंसा । जय जय जय जदुकुलअवतंसा ॥ जय असुरारी जय कंमारी । सुखकारी जय ज-यति मुरारी ॥ जय सुरनिधि रिधि जय नतिपाला। जगअंभोनिधिसेतु कृपाला ॥ जय गरुड़ासन जय सारँगधर । बहु कर चक्र गदा अंबुज दर ॥ जय मायापति अज भगवन्ता । जगकारन आद्वैत अ-नन्ता ॥ महि गोद्विज सुर सन्तन कारन । लीला हेतु रूप बहु धारन ॥ सब बिधि प्रीति प्रतीत सम्हारे । सब के मन को जाननहारे ॥ नर अनु-हारि चरित सुखदाई । जयति जयति जय जदु-कुलराई ॥

दोहा ।

नभ ते अस्तुति देवगन, करि करि बरषहिँ फूल।
बहत समीर सुहावने, तरुनिन मन अनुकूल ॥

सोरठा ।

सखियन कह्यो उपाय, गिरधारी के छलन को।
सो गहि नाचनचाय, बिनु श्रममनबांछितसफल॥

चौपाई ।

एक तिया सिर मकुट सँवारे । पीत दुकूल कन्हावरि डारे॥ कसि दुइ कछी गुलुफ लौं वाला। गर में पहिरि सुभग बनमाला ॥ तनु में भूषन बसन चढ़ाये । मनमोहन को रूप बनाये ॥ कनक लकुटिया काँखे लीन्ही । दुहुँ कर मुरली अधरन दीन्ही ॥ सुन्दर गावति राग सुहावत । सब के मन मन हर्ष बढ़ावत ॥ काहु सखा बनि हरषित गाता। हरि सों उगहति सुदधि जगाता॥ एक कान्ह काँधे धरि हाथा । फिरिकी सम घुमरति सुख साथा ॥ एक बनी चुरिहारिन रूरी। प्रभु सन कह पहिरोगी चूरी ॥

दोहा ।

इक आई बनि मालिनी, डाली भरि लै माल ।
प्रभुगरडारि कपोल छ्वै, मनमन होति निहाल॥

सोरठा ।

यहि विधि हासबिलास, करिपुजवहिँमनकामना।
प्रभु श्रुति गुनन प्रकास, बेद रिचा सब गोपिका॥

चौपाई ।

राधे दिसि निरखत बनवारी । स्यामा हरि तनु रही निहारी ॥ प्रीति पलक फेरहिँ दुहुँ ओरी। लाल छबीले नवलकिसोरी ॥ उभै चतुर जानत रसरीती । सोभा रति अनंग छबि जीती ॥ दंपति रूप चाहि अभिरामा । ठगि सी रही मोहि सब बामा ॥ भलि जोरी सराहि हरषानी । उपमा सारद कहत लजानी ॥ उत ग्वालन सुत अरु बलरामा । हाँक देत भागहु घनस्यामा ॥ निकट कटक आतुर चलि आवैं । धरन हेतु तरुनिन दौरावैं ॥ कोटिन जुक्ति स्याम हित करहीं । लगहिँ न एक चहूँ दिसि फिरहीं ॥

दोहा ।

कपट बेष धरि तियसुदल, जाहिँ सखन मुसुकात।
घात न पावहिँ एकहू, फिरि आवहिँ पछतात॥

तब राधा कहि सखिन सों, चलहु जसोमतिपास।
सुत कर स्वांग बिलोकहीं, नाचहिँ फागुन मास॥

सोरठा ।

हरषि चलीं सुनि वाम, आगे पीछे गावतीं ।
मध्य राधिका स्याम, चाल मरालतजावनी ॥

चौपाई ।

गहि गोभनौट मोरि कलकटिया । मन स-रमाइ धरत पग बटिया ॥ बाजत कंकन काँची पायल । धुनि सुनि होत मदनमन घायल ॥ लागु दिये प्यारी कर गाढ़े । चित सकोच जुत घूंघट काढ़े ॥ तनिक न देत पुरुष अनुहारी । साँचहु रचि बिरंचि जनु नारी ॥ पटतर देन सारदा ढूढ़ा । लही न कतहुँ भई मति मूढ़ा ॥ जुगल सरूप बिलोकि सिहानी । इन समान इन कहि सकुचानी ॥ ग्वालन लखि जात ब्रजगोरी । सब मिलि चले सुनावत होरी ॥ आगे जूथ जात ब्रज-बामा । पाछे सखा संग बलरामा ॥

दोहा ।

गावत बाद्य बजावते, सखी सखा यदुबीर ।
पहुँचे नन्द अवास पर, कसमसात बड़ि भीर ॥

सोरठा ।

जातहिँ भई बहारि, ग्वाल गुलाल उड़ावहीं ।
खेलबिवस सुकुमारि, बहुरि फाग खेलन लगीं ॥

चौपाई ।

मच्यौ पौर पै अतिसै दंगा । छाड़हि अमित रंग इक संगा ॥ लेहिँ रंग पिचुकारी भरि के । नाचहिँ ग्वाल कुतूहल करि के ॥ जाइ निकट भाजहिँ रँग छाड़ी । कुचन कुमकुमा मारहिँ ताड़ी ॥ कसि कसि मूठि अबीर चलाई । गरद गुलाल रही नभ छाई ॥ महा मारि रँग गोप मचाई । गईं सकल ग्वालिन अकुलाई ॥ भरे अबीर पलक के मूदैं । खोलहि आँखि रकत की बूदैं ॥ नाहिन चेत देह भइ भोरी । भूलि गई सब खेल बहोरी ॥ चलहिँ एक एकन ते बूझी । अमित रंग सों परै न सूझी ॥

दोहा ।

गिरहिँ परस्पर अरुझि कै, परहिँ हार गर टूटि ।
पट अभरन अरु देह की, गई सबहिँ सुधि छूटि॥

सोरठा ।

धरि धीरज उर गाढ़, भूषन बसन सम्हारि तनु ।
अनख उमगि मन बाढ़, खेलन लागीं भामिनिन॥

चौपाई ।

छाड़न लागी रंग समूहा । गोपन बपुष गुलालन छूहा ॥ इत जसुमति जेवनार बनावति। हुलसि हुलसि के हरिगुन गावति ॥ रोहिनि टहल करति ऊपर की । जोहति बटिया हरि हलधर की ॥ सुनत द्वार तन गल बल भारी । रोहिनि सहित पौर पगु धारी ॥ मची धमार भई अति भीरा। देखि जसोमति पुलक सरीरा ॥ भरी हुलास मगन मन मैया । पूछति कित बलदेव कन्हैया ॥ चहुँघा हेरति कहति लला रे। कित खेलत मम प्रानपियारे ॥ रहे कृष्ण राधिका समीपा । नारि बेष बर जदुकुलदीपा ॥

दोहा ।

महरि हाथ ललिता धरे, हरि पहँ गई लिवाय ।
कहति नारि नइ देखहु, लीजै चूमि बलाय ॥

सोरठा ।

ल्याइ खोजि पतोहु, करहु सगाई पुत्र की ।
देहु नेग कछु मोहु, भवन बसै नँदराय को ॥

चौपाई ।

हँसत सकल जुवती चहुँ ओरी । जसुमति चकित देखि छबि भोरी ॥ बिनु चीन्हे सुत मोहित मन ते । धनि वह कोखि जनी जा तन ते ॥ अति सुकुमारि सराहि कहै की ॥ स्यामल सुता कहो सखि केकी । यह आई मथुरा ते नारी । गुन छबि रूप सील उँजियारी ॥ परम नवीन अबहिँ यह बाला । पुत्र बिवाह करहु यहि साला ॥ करि करि उक्ति महरि बहकावैं । दै दै सैन हरिहिँ मटकावैं ॥ भूली सुत सोभा लखि माता । कहति रूप भल दीन्ह बिधाता ॥ अम्बबचन सुनि प्रभु सकुचाई । ठाढ़े मन उदास सिर नाई ॥

दोहा ।

निजमाया बस करि सबै, चरित मनुज अनुहारि ।
भोर भाय निज माय सों, बोले घूंघट टारि ॥

सोरठा ।

हिय सचु बदन मलीन, मातु हमैं अवलन धरी।
मनभायो सब कीन, बरजोरी यह गति करी ॥

चौपाई ।

भ्रमित मातु मुनि सुत कल बानी । फिरि फिरि देखि चीन्हि सकुचानी ॥ नारि वेष नइ छबि अति बाढ़ी । मन सिहाति टन तोरति ठाढ़ी ॥ सुत उदास लखि बहुरि जसोदा । तियन रिसाति भरे उर मोदा ॥ जस अबला देखिय ब्रज माहीं । तीन लोक खोजहु कहुँ नाहीं ॥ मृदुता छमा सुशील न रेखा । बेटी बहू केर जस लेखा ॥ दम्भ पखण्ड करकसी बोली । यह दुलार राखहु निज टोली ॥ तजो कान्ह सँग के खिलवारू । अपने घर राखहु व्योहारू ॥ तेहि भाई जोहै जनमाई ॥ ऐसन चाल न मोहिँ सुहाई ॥ सुनि ललिता बोली मुसुकाई । सुत कर पच्छ करति कत माई ॥ निज ढोंटा को देति न दोषू । हमहन पर करती कत रोषू ॥ हँसी क-

रत मग चलते गारी। समुझहु हौं सरहज की सारी ॥ सुनि सुत गुन तब बरज्यो नाहीं ॥ अब कस छन छन भा उर माहीं ॥

दोहा।

सुनत बचन सब हँसि परी, हरि जननी मुसुकान।
भई बौरही डून लगे, गयो हमारो ज्ञान ॥

सोरठा।

बड़ी ठिठोलीबाज, चतुर लगावहिँ आप को ।
तनिक देहँ नहिँ लाज, पुर्षन के सिर नाचहीं ॥
फिरैं निगोटी नाय, चार दिना की बात है ।
झूठी बचन सहाय, आजु बड़ी बक्ता बनी ॥

चौपाई।

काल्ही की लरकी हौ अवहीं। यह छछन्द छल सीख्यो कबहीं ॥ हमरे आगे बनी सचेती। नई छोहरी उत्तर देती॥ जाइ भवन निज पूछहु बाता। कबहुँ जवाब दीन्ह पितु माता ॥ या बिधि कहि अनेक छल हीना ॥ सुत सन्तोषि तियन सिख दीन्हा॥ ताही समय नन्दजू आये।

देखि महरि हँसि महर बुलाये ॥ पूत स्वांग इत निरखहु आई। अजब नारि नइ छवि दरसाई॥ बाबा लखि मन लजे कन्हाई। भोरे भाव अल्प मुसुकाई ॥ नन्द निहारि मगन निज बेटा । अति सुख बढ़ा समात न पेटा ॥

दोहा।

रोहिनि हँसि भीतर गई, दासिन लई बुलाय ।
घोरि कमोरिन रंग बहु, जसुमति के ढिग ल्याय॥

सोरठा।

मन सचु पुलकित अंग, महरि जसोदा रोहिनी।
भरि भरि झारी रंग, एक एक नहवावती ॥

चौपाई।

राधा सैन पाइ सखि हरषत। अमित गुलाल पौर पर बरषत॥ जसुदा सहित रोहिनीमैया। भई रंग में थापक थैया ॥ उचित ग्वालिनिन नन्दहिँ घेरी । सराबोर तनु मुख कर फेरी ॥ काहु उपरना खींचति आछे। कोउ पटुका धरि छोरति पाछे॥ कोउ अंजन अँगुरी भरि लेहीं ।

पलक उघारि नयन दै देहीं ॥ कोउ अठिलाइ कहति मुसुकाई । महर देहु अब फाग मँगाई ॥ नाहित नाचि उरिन ह्वै जाहू । तब तुम ते मँगिहैं नहिँ काहू ॥ पिय छबि देखि नचहु सुनि बानी । दै आँचर जसुमति मुसुकानी ॥ यहि बिधि सब सों खेलि खिलाई । करि बहु बिनती तनय छुड़ाई ॥ मकुट बाँसुरी माल दुकूला । दै दीन्ही सब मन अनकूला ॥ हँसि बोली ललितादि लुगाई । फाग नेग महँ लेब कन्हाई ॥ सुनतहिँ हँसन लगी महतारी । भलो भले कहि कै ब्रजनारी ॥

दोहा ।

कहति जसोमति कान्ह सों, बरसाने अब जाहु ।
करहु सूश्रुशा तियन की, तिनके हाथ बिचाहु ॥

सोरठा ।

कही रोहिनी माय, नित सेवहिँ इत आइ तिय॥
त्रिभुवन पुज्य कन्हाय, कहे गरग वैदिक मुनी ।
सब उर परमानन्द, सखी सखा माता पिता ।
जय जय गोकुलचन्द, ब्रजजन चात्रिक बरनहीं ॥

चौपाई।

या विधि फाग विहरि गिरधारी। गोप ग्वालिनिन कीन्ह सुखारी ॥ फागुन खेल देखि सुख सानी। उत्सव भरी नन्द पटरानी ॥ चितै कान्त करि सैन बुलाई। लै इकान्त सम्मत ठहराई ॥ भारी तिउहारी होरी की। करो बिदाय ग्वाल गोरी की ॥ प्रथमहिँ भोजन देहु कराई। पट भूषन पुनि देहु बनाई ॥ भलहिँ नन्द कहि मन अनुकूले। बारिद बचन सिखी जनु फूले ॥ महर अनेक दास गुहराये। सुनि कै सकल उतायल धाये ॥ तिन सों कहा हेतु समुझाई। विमल करो दुआर अँगनाई ॥

दोहा।

सिर धरि आयसु सो चले, किये तुरन्त बनाव।
सखा सखी अज्ञा भई, अब अन्हान कहँ जाव ॥

सोरठा।

महरि बुलाइ सुआर, व्यंजन बिबिध बनावहू।
भोजन चारि प्रकार, जाइ किये सब बेगहीं ॥

चौपाई ।

चले न्हान सब जमुना तीरा । गोपी गोप ह-रषि जदुबीरा ॥ कौतुक करत तटनि तट आये । फुले बिबिध द्रुम परम सुहाये ॥ फूलडोल तहँ रचे कृपाला । भये मुदित मन ग्वालिन ग्वाला ॥ झूलि झूलि श्रम खोइ सुखारी । मज्जन करन लगे सुचि बारी ॥ होड़ बदत इक छूअत धाई । कूदत एक गिरत बिछिलाई ॥ भरि भरि अंजुलि वारि उछारैं । तैरि तैरि जलजात उपारैं ॥ कमल नाल पिचुकारि बनावहिँ । भरि भरि जल तकि तकि तनु नावहिँ ॥ जलज पराग मलत मुख माहीं । ठावहिँ बूड़ि अनत उतिराहीं ॥ तैरि बु-ड़त इक धरि पद पावहिँ । एक चिहुंकि तीरे भजि आवहिँ ॥ न्हाइ न्हाइ पट पहिरि चले तब । बलदाऊ हरि सखी सखा सब ॥ गावत मंगल चलीं लुगाई । धुनि सुनि कोकिल लाजि लुकाई ॥ आये सकल नन्द के द्वारे । बल घनस्याम नि-केत पधारे ॥

दोहा ।

जननी कहति उठावहु, छिप्रहिँ देहु जेवाय ।
सुनतहिँ चले बुलावने, मनमोहन हरखाय ॥

सोरठा ।

सब कहँ लियो हँकारि, जेते गोपी ग्वाल सब ।
पाँव पखारि पखारि, चले दरेरा देइ कै ॥

चौपाई ।

अजिर घरन महँ और उसारी । बैठि गईं सब गोपकुमारी ॥ कसमस बाढ़ी चौक पौर पर । बैठी भीर ग्वालबालन कर ॥ लगे परन दोना पनवारी । पात्र विचित्र धरे भरि बारी ॥ भोज्यादिक भोजन बिधि नाना । बरनि सकै को पाक विधाना ॥ परुसन लगे चाह मन भारी । नर दिसि नर नारी दिसि नारी ॥ खटरस बहु प्रकार जेवनारा । धरत जात पनवारि सुआरा ॥ सरस अमल पावित्र सुधासा । सुन्दर रुचि अनुसार सुबासा ॥ पंच ग्रास करि अचमन आगे । पंच खाहु सुनि जेवन लागे ॥

दोहा ।

खात सराहत स्वाद को, भरे प्रेम सब लोग ।
विबुधसुमनझरिगगनते, सकुचहिँलखिसुखभोग॥

सोरठा ।

दोउ बर नन्दकिसोर, कृष्णचन्द्र बलभद्र जी ।
लखत फिरत चहुओर, जेहि कोउ जेवन ना घटै॥

चौपाई ।

कोउ जेवनार घटन नहिँ पावैं । सिघ्रहिँ कान्ह सुआर बुलावैं ॥ सो बरजै अबहीं है भैया। बरबस निज कर डारि कन्हैया ॥ घुमत घुमत जुवतिन महँ आये । पूछत परुसत हरष बढ़ाये॥ देखत पहुँचे राधा आगे । परुसनहार पुकारन लागे ॥ नहिँ सालन प्यारी पनवारी । ल्यावहु खाती सूख सुहारी ॥ अस कहि हँसे मन्द मुख मोरी । सुनत निहाल भई ब्रजगोरी ॥ कूटि का-रति बहु तरक सुनाई । तुमहीं लै आवहु हरि धाई ॥ कोउ बोली धनि है तू प्यारी । जाहि साक ल्यावत गिरिधारी ॥

दोहा ।

तैं राधे रति की सरिस, तो सरि रति की बात ।
सो ज्यों की त्यौंही रही, तू दिनप्रति अधिकात ॥

सोरठा ।

तो सी दुनी न कोय, जाते पटतर दीजिये ।
तोसी तैही होय, इहो कहत सकुचात मन ॥

चौपाई ।

सुमुखि सराहति कहि छविखानी । सुनि सुनि कीरति कुअँरि लजानी ॥ भोजन करत परम सुख भरहीं । कहि कहि स्वाद प्रसंसा करहीं ॥ चतुर सुसील सुआर सुबानी । अँटक न लागत परुसत आनी ॥ बहुरि चलाये दही मिठाई । भाँति अनेक बरनि नहिँ जाई ॥ देखत सखी सखा सुख माने । हृदय सराहत खात अघाने ॥ भोजन करि अँचये सब सादर । दीन्हे नागबेलि करि आदर ॥ बसन बिभूषन रुचिर मँगाई । अति सप्रीति सखियन गुहराई ॥ चारु घाघरी सुन्दर सारी । मन हरखाइ देति महतारी ॥

दोहा ।

हँसि हँसि सब को दे रही, भूषन बसन सँवारि ।
पहिरिपहिरिमनहरषित, एकहिँ एक निहारि ॥

सोरठा ।

बिलग राधिका ठाढ़ि, कह जसुमति काकी सुता।
नव अभरन पट काढ़ि, कहती तुमहू लेव री ॥

चौपाई ।

ललिता बोलि उठी मुसुकाई । पहिचानति नहिँ कीरतिजाई ॥ सुनतहिँ परमप्रमोद जसोदा। लीन्ह उठाइ धाइ निज गोदा ॥ अधिक प्रेम मन हृदय लगाई । पूछति कहहु मातु कुसलाई॥ कहु वृषभान महर हैं नीके । मिल्यो न हाल बहुत दिन जी के ॥ सुनि जसुदा की बात सुहाई। बोली कुअँरि पियूष चुआई ॥ राउर कृपा कुसल पितु माता । कहउ न तुम आपन कुसलाता ॥ सुनत जसोमति मृदुबर बानी। परम चतुर कहि मन मुसुकानी ॥ बोली गिरा सनेह न थोरे । उनकी दया नेक सुठि मोरे ॥

दोहा ।

जबहीं जायो सदन निज, कहब सनेस हमार ।
मोरि हुती कीरति महरि, मिलब भेंट अँकवार॥

सोरठा ।

अस कहि रही लुभाय, देखि सलोन अनूठ तनु।
बार बार हिय लाय, मुख चूमति बरसति बपुख॥

चौपाई ।

सुनि सुनि प्यारी को पिक बचना। करत सराहन विधि की रचना ॥ मनहु बिस्व की सुन्दरताई। रचो बटोरि सनेह लगाई ॥ बहुरि देखि निज सुतहि लुभानी । मन मन हूहै कहति नँदरानी ॥ स्याम जोग व्रषभानकुमारी। राधे लायक मोर बिहारी ॥ अपने हाथ बसन नव नीका। पहिरावति भल भावत जीका॥ अभरन कलित सोबरन काही । क्रमसो लसति जहाँ जो चाही॥ को कबि बरनि सकै सुकुमारी। जाहि देखि रीझै बनवारी ॥ हरि चितवत राधा मुख कैसे। सरद ससिहि चकोरसुत जैसे ॥

दोहा ।

पलक परन ते परिहरी, रुचि अवलोकत रूप ।
नेकु नयन टारत नहीं, भये बिबस सुर भूप ॥

सोरठा ।

नाम लेत मुख जासु, कामादिक डर छूटहीं ।
समुझत लीला तासु, सठ भूलहि सन्तन सुखद॥

चौपाई ।

बहु बिधि हरि प्रिय मातु सँवारी । औरन देति पुकारि पुकारी ॥ सखि चित चाहित भूषन देती । हृदय प्रेम तनु पुलकित लेती ॥ देइ सुहाग असीस सुनाई । खोंछे डारी पान मिठाई॥ सनोमान सबहीं बिधि कीन्हा । बिदा हेतु पुनि आयसु दीन्हा ॥ सुनतहिँ काँपि उठी सब आली। छाड़ि न सकहिँ स्याम बनमाली ॥ अधिक प्रेम बस बिकल लुगाई । डारि दियो मन भेंट कन्हाई॥ बार बार प्रभुओर निहारी । मनहीं मने जाति बलिहारी ॥ सम्हरि कठिन धीरज उर राखी । चली सकल मिलि जय जय भाखी ॥

दोहा ।

स्यामल मूरति हिय धरे, गमन किये निज धाम।
प्रीतबिबस पग ना परै, फिरिफिरिचितवतिबाम॥

सोरठा ।

जात सराहति बाल, बिधि बन्दहि बर माँगहीं ।
जुगजुगजियहिँगोपाल, करहिँसदानवचरितब्रज॥

चौपाई ।

पुनि गोपनसुत लीन्ह बुलाई। देत पोसाक सबहिँ सुख पाई ॥ झगा कन्हावरि पाग सुहावन। लेते ग्वालबाल मनभावन ॥ ग्वालबालकन जाचहिँ जाही। हरषित नन्दराय दिय ताही ॥ कुण्डलादि गोपन पहिरावा । निज निज रुचि ग्वालन सुत पावा॥ आसिरबाद देहिँ सुख ब्राता। चिरजीवहु बल मोहन भ्राता ॥ नित ब्रज में लीला प्रभु कीजै। सखा सखी कहँ नित सुख दीजै ॥ यहि बिधि गुन गावत सब ग्वाला। पुलकित तनु उर प्रेम बिसाला॥ हरषि चले कहि जय जयकारी। निजनिज भवन जुहारि जुहारी॥

सुमिरि सुमिरि हरि फाग बिनोदा। मगन होत ता प्रेम प्रमोदा॥ पूछत कहत एक नहि आवै। फागचरित देखत मन भावै॥

छन्द हरिगीतिका।

भावै बिलोकत फाग प्रभु को अगम सारद सेसहू। कहि सकत नाहि हेरंब नारद व्यास निगम महेसहू॥ प्रभु कै अनुग्रह जन मकुन्दी कछुक बरनि बखानेऊ। जिमि छीरनिधि मधि परि पपिलका थाह निज भर जानेऊ॥

दोहा।

बासुदेव लीला सुखद, बर्ननीय सुभदानि।
गुन प्रसंग करि बरनहीं, कबि कोबिद अस जानि॥

सोरठा।

त्रिभुवनपति गुन गाथ, प्रेम सहित गावै सुनै।
चारि पदारथ हाथ, सूल त्रिबिधि नहिँ व्यापई॥

ग्रन्थकर्ता की स्तुति।

त्रिभंगी छन्द।

जय जय गोबिन्दा जयति मुकुन्दा अखिल

लोकपति कृष्ण प्रभो। जय कुंजविहारी जय गिरधारी जय सुखकारी चरित विभो ॥ वृषभासुर मारन ब्रजदुखटारन केसी व्योमा रजक हयं। जय अरिधनुखण्डन असुर निकन्दन जगवन्दन पद कंज स्वयं ॥ जय हस्तीबारन मल्लपछारन कंस सँघारी असुरारी। जय जय जगपावन दुष्टनसावन सोककरावन रिपु नारी ॥ उग्रसेन निवाजक नृपता साजक जनक जननि दुख अपहारं। भव कारन करता भूभयहरता कलमखहरता श्रुति सारं ॥ जय घटघटबासी गुननप्रकासी जगत उदासी अविनासी। बैकुंठविलासी छीरधिबासी चरित सुधासी सुखरासी ॥ जय अधमउधारी बिरद सँभारी अबुध मकुन्दी तव सरनं। प्रभु देहु ठिकाना लखि निज बाना बार बार प्रनवत चरनं ॥

दोहा।

करहु कृतारथ मोहि प्रभु, हरहु सोक सन्ताप।
दारिद दरि बिपदा हनो, सब समर्थ हो आप ॥

सोरठा ।

को कवि पावै पार, अकथनीय अद्भुत चरित ।
पाइ तुम्हार अधार, बरनत जेहि मति है यथा॥

चौपाई ।

प्रभुचरित्र अम्भोधि अथाहू । पाव कि पार कोटि अहिनाहू ॥ सहसानन नहि बरनि सिराई । कहहुँ सुजन इक मुख किमि गाई ॥ हरि दाया हरिजन कछु बरनी । मनहु बनी भवसागर तरनी ॥ जस जहाज पर जो चढ़ि पाई । बिनु श्रम पार उतरि सो जाई ॥ कबिन बहुत रसग्रन्थ बनावा । ता मति फागचरित कछु गावा॥ अलंकार रसभाव गनागन । जुक्ती गुरु लघु रचना लच्छन ॥ भेद दोष गुन धुनि चतुराई । जानौं नहि कछु छन्द उपाई ॥ बालक बचन सरल सुनि काना । बाँचब याहि सुधारि सुजाना॥ यामें गुन है हरि बलरामा । फागचरित है याको नामा ॥ लीला अकथ बरनि नहि जाई । बहुत दिवस में उर कछु आई ॥

दोहा।

रतनाकर फल रतन छित, सुभ संबत सुखमूल।
मास दमोदर अर्क सित, रबिबासर अनकूल ॥

सोरठा।

पूरन फागचरित्र, भयो ग्रन्थ रसिकन सुखद ।
निजमन करन पबित्र, बरन्यो कीरति कृष्ण की॥

दोहा ।

बिश्वनाथ कासीपुरी, मुक्तिपदारथदाय ।
पंसकोस भीतर बसै, मोहनदास सराय ॥

सोरठा ।

ताहि ग्राम मो धाम, श्रीबास्तव कायस्थकुल ।
लालमकुन्दी नाम, कृष्णचरन आश्रित सदा ॥

दोहा ।

सपन परे निसि जगत के, जागुजागु जिव जागु।
भोर भयो भगवन्त पद, सकल मूढ़ता त्यागु ॥

इति श्री मुकुन्दीलालकृते फागचरित्रे चतुर्थस्तरङ्गः ॥ ४ ॥

॥ सम्पूर्णं शुभमस्तु ॥